श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस-नई दिल्ली
का साप्ताहिक मुखपत्र

जैन प्रकाश

जैन प्रकाश सम्पादकीय कार्यालय
जैन भवन, 12, शहीद भगत सिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली-01
Tel.: 011-23363729, 23365420 Mob.: 9019731906
E-mail : aissjc1906@gmail.com
Website : https://jainconference.org

सम्पादक : डॉ. अमित जैन
Mob. 9837394448, 9997889995
E-mail : amitraijain78@gmail.com

श्रमण संघीय प्रथम पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आत्माराम जी म.

श्रमण संघीय द्वितीय पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आनन्दऋषि जी म.

श्रमण संघीय तृतीय पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री देवेन्द्र मुनि जी म.

श्रमण संघीय चतुर्थ पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म.

जून - तृतीय, अंक - 15 विक्रम संवत् - 2083 वीर संवत् - 2552 ईस्वी सन् - 2026

Address
Here

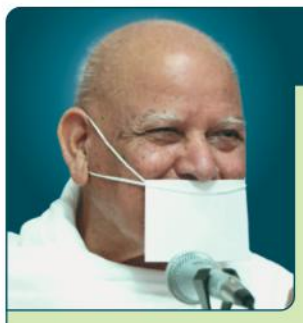

जैन दर्शन में योग

- युग प्रधान आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा.

योग अर्थात् जुड़ना, अध्यात्म में योग के द्वारा आत्मा के साथ जुड़ना होता है। शरीर को साधन रूप में उपयोग किया जाता है। "शरीर माध्यंमम् खलु धर्म साधनम्" अध्यात्म की साधना के अंतर्गत शरीर एक साधन के रूप में उपयोग किया जाता है।

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस सम्पूर्ण विश्व में योगा के रूप में मनाया जाता रहा है, जिसमें आसनों का प्रशिक्षण दिया जाता है, किंतु सम्पूर्ण योग में आत्मा से परमात्मा तक की यात्रा है।

अष्टांग योग में योग के आठ भेद बताए गए हैं। यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान समाधि-ये सभी मिलकर के योग बनता है। गीता में ज्ञान योग, भक्ति योग, कर्म योग आदि के रूप में वर्णन मिलता है।

जैन दर्शन में मन योग, वचन योग, काय योग के रूप में वर्णन मिलता है। आत्मा से परमात्मा तक पहुँचने की यात्रा को योग कहते हैं। जैन दर्शन में जीव से शिव तक की यात्रा को योग कहते हैं।

जीव जब अजीव से जुड़ता है अर्थात् शरीर को अपना मानता है तो उसका संसार खड़ा होता है और जो भी वह क्रिया करता है उसका कर्त्ता बन जाता है। कर्त्ता भाव के कारण कर्म के बंधन होते हैं। कर्म बंधन के मूल कारण 27 है - मैंने किया, मैं करता हूँ, मैं करूंगा। भूत, भविष्य व वर्तमान की अपेक्षा से इसके नौ भेद हो जाते हैं। मन, वचन, काया इन तीनों से गुणा करने पर कुल 27 भेद हो जाते हैं। यही कर्म बंधन के कारण हैं।

इस प्रकार जीव अज्ञान और मिथ्यात्व के अंतर्गत अनंत काल से चार गति चौरासी लाख जीवा योनि में भ्रमण कर रहा है। इसका मूल कारण है आत्मा ने स्व को गौण कर पर को अपना मान लिया और सारी अपनी शक्ति पर शरीर और शरीर से जुड़े संसार को दे दी।

जैन योग में इन कर्म बंधन के मूल कारण को रोकने की प्रक्रिया को संवर कहते हैं अर्थात् जीव अपने स्वरूप को जानकर शरीर और आत्मा का भेद कर आत्म धर्म में स्थित होता है। आत्म धर्म है ज्ञाता, द्रष्टा भाव अर्थात् जीव जगत के प्रत्येक क्रिया का मात्र दृष्टा है किसी भी क्रिया का वह कर्त्ता नहीं है। जब-जब जीव अपने स्वभाव में रहता है तो वह कर्म निर्जरा करता है और यह स्वभाव की स्थिति योग और ध्यान से प्राप्त होती है। (शेष पृष्ठ 5 में)

अध्यक्षीय

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस : जैन दर्शन में योग की साधना

- अतुल जैन - राष्ट्रीय अध्यक्ष
E-mail : ajvk1973@gmail.com

प्रिय बंधुओ,
सादर जय जिनेन्द्र!

प्रतिवर्ष 21 जून को सम्पूर्ण विश्व "अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस" के रूप में मनाता है। आज योग केवल भारत की सांस्कृतिक धरोहर नहीं, बल्कि सम्पूर्ण मानवता के लिए स्वस्थ, संतुलित और शांतिपूर्ण जीवन का मार्ग बन चुका है। परन्तु यदि हम जैन दर्शन की गहराइयों में जाएँ, तो पाएँगे कि योग हमारे धर्म और साधना का अत्यंत प्राचीन एवं मूल तत्व रहा है।

जैन परंपरा में योग केवल शरीर को स्वस्थ रखने का अभ्यास नहीं है। यहाँ योग का वास्तविक अर्थ है-आत्मा का अपने शुद्ध स्वरूप से जुड़ना। मन, वचन और काया की पवित्रता तथा आत्म-जागरण की प्रक्रिया ही सच्चा योग है। भगवान महावीर स्वामी ने संयम, ध्यान, मौन, प्राणों की सजगता और समता के माध्यम से जिस साधना का मार्ग दिखाया, वही जैन योग का सार है।

आज संसार का सबसे बड़ा संकट बाहरी नहीं, बल्कि मानसिक अशांति, तनाव, क्रोध, भय और असंतुलन है। जैन धर्म हमें सिखाता है कि जब तक भीतर शांति नहीं होगी, तब तक बाहर सुख संभव नहीं। "समायिक", "प्रतिक्रमण", "ध्यान", "स्वाध्याय" और "प्रेक्षा" जैसी साधनाएँ वास्तव में योग की ही उत्कृष्ट विधाएँ हैं, जो आत्मा को स्थिरता और चेतना प्रदान करती हैं।

जैनाचार्यों ने सदैव कहा कि योग का उद्देश्य केवल शरीर की शक्ति नहीं, बल्कि भावों की शुद्धि और आत्मा की उन्नति होना चाहिए। यदि योग के साथ अहिंसा, करुणा, अपरिग्रह और संयम का भाव जुड़ जाए, तभी वह पूर्ण योग बनता है। यही कारण है कि जैन धर्म का योग सम्पूर्ण जीवन को बदलने की क्षमता रखता है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम योग को केवल एक दिवस तक सीमित न रखें, बल्कि उसे अपने दैनिक जीवन का हिस्सा बनाएं। प्रतिदिन कुछ समय ध्यान, श्वांस की सजगता, सकारात्मक चिंतन और आत्मनिरीक्षण के लिए निकालें। इससे न केवल हमारा स्वास्थ्य बेहतर होगा, बल्कि परिवार, समाज और राष्ट्र में भी शांति और सद्भाव का वातावरण बनेगा।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के इस पावन अवसर पर मैं सभी से आग्रह करता हूँ कि हम जैन धर्म की महान साधना परंपरा को समझते हुए योग को आत्मिक उन्नति का माध्यम बनाएं तथा स्वस्थ, संयमित और जागरूक जीवन की ओर आगे बढ़ें।

आप सभी को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

सम्पादकीय

शाकाहार, अहिंसा और राजनीति का द्वंद्व : क्या यह चिंतन का विषय नहीं ?

- डॉ. अमितराय जैन - राष्ट्रीय महामंत्री

हाल ही में 26 मई 2026 को प्रकाशित हिन्दुस्तान टाइम्स, द टाइम्स ऑफ इंडिया तथा अन्य राष्ट्रीय समाचार-पत्रों में यह समाचार प्रमुखता से प्रकाशित हुआ कि पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी ने राज्यभर में लगभग 400 सरकारी कैंटीनों में सप्ताह में दो दिन मात्र 5 रुपये में 'माछ-भात' (मछली-भात) उपलब्ध कराने की घोषणा की है। यह व्यवस्था मुख्यतः 'माँ कैंटीन' योजना के अंतर्गत संचालित की जाएगी, जहाँ पहले से ही रियायती दरों पर भोजन उपलब्ध कराया जाता रहा है। सरकार ने इस योजना को बंगाल की खाद्य-सांस्कृतिक पहचान और जनकल्याण से जोड़कर प्रस्तुत किया है।

यद्यपि किसी राज्य की सरकार को अपनी स्थानीय परिस्थितियों और आवश्यकताओं के अनुरूप कल्याणकारी योजनाएँ संचालित करने का अधिकार है, तथापि जब जीव-हत्या से जुड़े किसी खाद्य पदार्थ के वितरण को सार्वजनिक उपलब्धि और सांस्कृतिक गौरव के रूप में प्रचारित किया जाता है, तब अहिंसा और जीवदया को जीवन का सर्वोच्च मूल्य मानने वाले समुदायों के मध्य स्वाभाविक रूप से चिंता और विमर्श की स्थिति उत्पन्न होती है। जैन समाज इसी संवेदनशील दृष्टिकोण से इस विषय को देख रहा है।

भारत की सांस्कृतिक चेतना का मूलाधार केवल विविधता नहीं, अपितु करुणा, सह-अस्तित्व और अहिंसा भी है। इसी कारण भारतीय सभ्यता ने संसार को 'जियो और जीने दो' का संदेश दिया है। जैन धर्म ने इस सिद्धांत को अपने जीवन-दर्शन का केंद्र बनाया और हजारों वर्षों से अहिंसा, शाकाहार तथा जीवदया की परंपरा को समाज में सुदृढ़ करने का कार्य किया है।

राज्य की स्थानीय आवश्यकताओं और सांस्कृतिक परिस्थितियों को देखते हुए सरकारों को नीतिगत निर्णय लेने का अधिकार है, किंतु जिस प्रकार इस योजना को सार्वजनिक रूप से उत्सव और उपलब्धि के रूप में प्रस्तुत किया गया, उसने देश के अहिंसाप्रधान समुदायों, विशेषकर जैन समाज के बीच चिंतन का विषय अवश्य उत्पन्न किया है।

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का मानना है कि लोकतांत्रिक व्यवस्था में प्रत्येक नागरिक को अपनी भोजन-परंपरा और जीवनशैली चुनने का अधिकार है। जैन समाज कभी भी किसी की व्यक्तिगत स्वतंत्रता में हस्तक्षेप का पक्षधर नहीं रहा। किंतु जब शासन स्वयं किसी ऐसी व्यवस्था को प्रोत्साहित करता हुआ दिखाई दे, जिसका प्रत्यक्ष संबंध जीव-हत्या से हो, तब अहिंसा और जीवदया को जीवन का सर्वोच्च मूल्य मानने वाले समाज के मन में स्वाभाविक प्रश्न उठना असंगत नहीं कहा जा सकता। (शेष पृष्ठ 5 में)

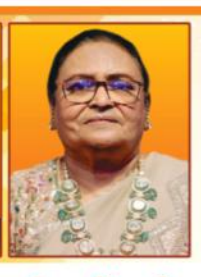

J. P. Jain Foundation
(स्व. श्री जय प्रकाश जैन की पुण्य स्मृति में स्थापित)
सेवा, करुणा और अहिंसा के मूल्यों को आत्मसात करते हुए समाज के अंतिम व्यक्ति तक सहयोग पहुँचाने के उद्देश्य से निम्न जनकल्याणकारी सेवा-कार्यों का सतत् संचालन

चेयरमैन अभय जैन

महामंत्री अतुल जैन

कोषाध्यक्ष अमित जैन

- जैन हेल्थकेयर सेंटर के माध्यम से निःस्वार्थ एवं समर्पित स्वास्थ्य सेवाएं।
- भिवानी में फूड वैन द्वारा जरूरतमंदों को नियमित भोजन वितरण।
- दर्द निवारक - महाउपयोगी नाकोडा भैरव लाल तेल का देश भर में निःशुल्क वितरण।
- निर्धन विधवाओं एवं असहाय वर्गों को राशन सहायता।
- जीव-दया के संरक्षण एवं करुणा आधारित सेवा अभियान।
- साधर्मी बंधुओं को हर प्रकार की सहायता।

MATUSHRI BHAWAN, 537/5, Doodh Wali Gali, Mehrauli, New Delhi-110030 9717524774 Email.: foundationjpjain@gmail.com

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के पदाधिकारी साधु-साध्वीवृंद

युगप्रधान, ध्यानयोगी, आचार्य सम्राट् परम पूज्य श्री शिवमुनिजी म.सा.

आगमज्ञाता प्रज्ञामहर्षि युवाचार्य परम पूज्य श्री महेन्द्रऋषिजी म.सा.

उपाध्याय मण्डल

परम श्रद्धेय डॉ. श्री विशालमुनिजी म.सा. 'वाचनाचार्य'
परम श्रद्धेय श्री रमेशमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रवीणऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री गौतममुनिजी म.सा. 'प्रथम'

प्रवर्तक मण्डल

परम श्रद्धेय श्री कुन्दनऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रकाशमुनिजी म.सा. 'निर्भय'
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राजेन्द्रमुनिजी म.सा
परम श्रद्धेय श्री सुकनमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री विजयमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री सुभद्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री आशीषमुनिजी म.सा.

मंत्री मण्डल

परम श्रद्धेय श्री शिरीषमुनिजी म.सा. (प्रमुख मंत्री)
परम श्रद्धेय श्री कमलमुनिजी म.सा. 'कमलेश' (संघ-नीति एवं जनसम्पर्क)

सलाहकार मण्डल

परम श्रद्धेय श्री सुरेशमुनिजी म.सा. 'शास्त्री'
परम श्रद्धेय श्री तारकऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री रमणीकमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री दिनेशमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राममुनिजी म.सा. 'निर्भय'

प्रवर्तिनी मण्डल

परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री चंदनाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सरिताजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री सुप्रभाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सुधाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री प्रतिभाकंवरजी म.सा.

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस-विश्वस्त मण्डल

श्री रमेश भण्डारी जैन, इन्दौर - चेयरमैन	93021 03817
श्री बाबूलाल रांका जैन, बैंगलोर	93434 83838
श्री रमनलाल लुंकड़ जैन, पूना	98505 00015
श्री सुभाष ओसवाल जैन, नई दिल्ली	98110 45440
श्री अतुल जैन, नई दिल्ली	98110 75336
श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, चेन्नई	98410 30035
डॉ. अमितराय जैन, बड़ौत	98373 94448
श्री प्रकाश धारीवाल जैन, पुणे	98222 42795
श्री अशोक मेहता जैन, सूरत	98251 19082
श्री उगमचंद गांधी जैन, इचलकरंजी	93260 22525
श्री विनय कुमार जैन, पानीपत	83968 00000
श्री पदमचंद कांकरिया जैन, चेन्नई	98841 67400
श्री राजीव जैन 'सी.ए.', दिल्ली	98110 42280
श्री कांतिकुमार लोढ़ा जैन, छत्रपति संभाजीनगर	82862 00000
श्री संजीव जैन, लुधियाना	98140 25325
श्री सुनील बाफना जैन, घोड़नदी	98505 67010

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ की मातृसंस्था
श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली
सम्माननीय पदाधिकारीगण-कार्यकाल वर्ष : 2025-27

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री अतुल जैन, दिल्ली	98110 75336
राष्ट्रीय महामंत्री : प्रो. डॉ. अमितराय जैन, बड़ौत	98373 94448
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष : श्री विनयकुमार जैन, पानीपत	83968 00000
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री विजय जैन, पानीपत	98966 00022
राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन : श्री नरेश बोहरा जैन, मुंबई	76665 40600
राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष : श्री जसवंत जैन, दिल्ली	98104 35108
राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष : श्री रजनीश जैन 'राज', दिल्ली	98116 14567

योग, शक्ति जागरण

- श्रमण संघीय युवाचार्य पू. श्री महेन्द्रऋषि जी म.

समस्त प्राणि जगत सुखसाता की इच्छा रखता है। मानव प्राणी भी अपने लिए सुख (शांति) और साता (स्वस्थता) के लिए अनेकों उपाय खोजता है। प्राचीन काल से यो खोज हो रही है, जिसमें सुख और साता दोनों की प्राप्ति कराने वाला सर्वोत्तम मार्ग है 'योग'। योग का अर्थ है जोड़ना। जो स्वस्थता से जोड़ता है वह योग है। योग आन्तरिक, बाह्य शक्तियों से जोड़ने वाला सामर्थ्यशाली तत्व है।। भारतवर्ष के प्राचीन ऋषि-मुनि-योगी-महात्मा साधकों ने इसे खोजा, विकसित किया। आज खान-पान, वातावरण, जीवनशैली परिवर्तन, मानसिक तनाव आदि के कारण मानव भयंकर शारीरिक-मानसिक अस्वस्थताओं से गुजर रहा है। Cancer, Blood Pressure, Diabetes (रक्तचाप मधुमेह) आदि अनेक घातक बीमारियाँ आनुवंशिकता के रूप में आज के मानव के लिए अभिशाप बन रही है। एकल परिवार, प्रतिस्पर्धा, अनिश्चितता आदि के कारण हताशा, निराशा मानस प्रचंड दबाव का अनुभव कर रहा है। अनेक शारीरिक, मानसिक व्याधि से मुक्त होने का सरलतम, प्राकृतिक विश्वसनीय उपाय है 'योग'। 'योग' को समझना, उसका अभ्यास करना (पुनरावर्तन करना) यह स्वास्थ्य और शांति की कुंजी है।

श्रद्धेय आचार्य सम्राट् श्री आत्मारामजी म.सा. ने "जैन योग सिद्धान्त और साधना ग्रन्थ द्वारा योग के स्वरूप, प्रकार, अभ्यास और परिणति (फलश्रुति) आदि के सन्दर्भ में विस्तृत अभ्यासपूर्ण ग्रन्थ लेखन किया है। आचार्य हरिभद्रसूरि ने योग बिन्दु ग्रन्थ में बताया है - योगः कल्पतरः श्रेष्ठोः, योगश्चिन्तामणिः परः।" योग श्रेष्ठ कल्पवृक्ष है। सामान्य रूप से कल्पवृक्ष विशिष्ट काल में ही होते हैं तथा अत्यंत पुण्यशाली को ही उसका लाभ मिलता है। योग मार्ग प्रत्येक पुरुषार्थी साधक को सहज, सर्वदा उपलब्ध है। कालातीत ऐसा यह अमोध, अमूल्य, उत्कृष्ट, सुनिश्चित लाभ देने वाला योग है। 'चिन्तामणि' इच्छित वस्तु देता है, किन्तु योग यह विशिष्ट और श्रेष्ठ चिन्तामणि है। 'योग' से मन को इष्ट-कांत-प्रिय-मनोरम साधन सहज हस्तगत होते हैं।

जैन दर्शन में योग का अर्थ है मन-वचन-काया के माध्यम से होने वाला चेतना का स्पंदन। मन-वचन-काया का संवर, गोपन योग साधना है। सम्यक् से प्रयोग तथा अनावश्यक, अनुचित व्यापार (मन-वचन-काया की प्रवृति) का त्याग। यह साधना साधक की आन्तरिक शक्तियों के जागरण के साथ-साथ चेतना का उर्ध्वारोहण कराती है। भगवान महावीर ने अपने साधना काल के साढ़े बारह वर्ष में विविध आसनों के प्रयोग से अपने शारीरिक-मानसिक बल को सुदृढ़ रखा। आचारांग सूत्र में उनके द्वारा प्रयुक्त दण्डासन, वीरासन, उत्कटिकासन, कायोत्सर्गासन गोदुहासन आदि का वर्णन प्राप्त होता है। अप्रमत्तता (जाग्रति Awareness) के लिए इन विविध आसनों का आलम्बन प्रभु ने लिया था। प्रभु ने आसन से काया को मौन से वाणी को, ध्यान से मन को साधा। ठाणेणं-मोणेणं झाणेणं अर्थात् स्थिरता, मौन और ध्यान द्वारा अपने लक्ष्य की ओर प्रभु बढ़े। जैन आगम, साहित्य दर्शन में योग अर्थात् संवर और तप का प्रयोग है। संवर से (यम नियम, आसन, आहार से दुष्प्रवृत्ति का निरोध हैं और तप (प्राणायाम आदि से पूर्व संचित कुसंस्कारों का शोधन है।

पारंपरिक एवं प्रचलित रूप से योग शब्द यम-नियम-आसन-आहार, प्राणायाम, ध्यान, धारणा, समाधि इन 8 अंगो वाला है। जो महर्षि पतंजली तथा अन्य दार्शनिकों द्वारा उल्लिखित हैं। इस योग द्वारा आज के युग की अनेक चुनौतियों का समाधान सहज सम्भव है। यम-नियम-आहार द्वारा नशीले पदार्थ, जंक फूड और कुव्यसनों से रक्षा होती है। आसन-प्राणायाम द्वारा प्राणशक्ति का विकास शारीरिक स्वस्थता में विशेष सहायक होता है। रक्ताभिसरण् पाचन तंत्र, श्वसन क्रिया को सुदृढ़ बनाकर समग्र शरीर को स्वस्थ रखता है। प्राणायाम से उत्साह की सहज अभिवृद्धि होकर चिन्ता, निराशा के घने बादल छूट जाते है। ध्यान-धारणा- समाधि आध्यात्मिक शक्ति का जागरण एवं उत्कर्ष करती है, जो मानव मात्र का चरम-परम लक्ष्य है। समग्र विश्व योग दिवस से प्रेरित होकर योगाभ्यास में आगे बढ़े। उससे मानवमात्र शारीरिक स्वस्थता, मानसिक उत्साह-उल्लास, शांति के साथ आत्मिक चेतना के जागरण में सफल हो सकता है।

प्राचीन भारतीय साहित्य में उल्लिखित, जीवन में अनुभूत 'योग' को आज पाश्चात्य, पौर्वात्य जगत् के सभी देशों ने स्वीकार किया है। भारत के प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी (जो स्वयं उत्कृष्ट योग साधक है) ने UN के मंच से विश्व के सभी प्रमुख नेताओं को योग से अवगत कराया और उसे समग्र विश्व की आवश्यकता बताया और अपनाने का आव्हान किया। उसी के फलस्वरुप आज विश्व के छोटे-बडे प्रायः सभी देशो ने 21 जून को विश्व योग दिवस के रूप में स्वीकार किया है। वर्ष का सबसे बड़ा दिन 21 जून है, इस अवसर को योग दिवस के रूप में स्वीकार करके एक शुभ संदेश समग्र विश्व को प्रदान किया है। 21 जून जैसे सबसे लंबा, बड़ा दिन है, वैसा ही लंबा बड़ा आयुष्य योग से प्राप्त हो सकता है। दीर्घायु स्वस्थता की कुंजी 'योग' सभी के लिए मंगलकारी बने।

युवा शाखा द्वारा जरुरतमंद परिवारों हेतु अस्पताल में मेडिकिल डिस्काउंट कार्ड योजना शुरु

छत्रपति संभाजीनगर (महाराष्ट्र) : छत्रपति संभाजीनगर के प्रतिष्ठित कमलनयन बजाज अस्पताल के साथ श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस युवा शाखा के द्वारा Jain Gazetted Minorities के जरुरतमंद परिवारो के लिए के लिए अस्पताल में Minimum 20% Discount or More ऐसा MoU Sign किया गया। इस कार्य के लिए जैन कॉन्फ्रेंस युवा शाखा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री विपुल जैन ने प्रोत्साहित किया और समय-समय पर जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अतुल जैन एवं राष्ट्रीय महामंत्री डॉ. अमितराय जैन ने मार्गदर्शन प्रदान किया। इस Initiative के तहत Gazetted Jain Minority के जरूरतमंद परिवारों को इस अस्पताल में में तत्काल प्रभाव से कम से कम 20% Discount प्राप्त होगा और Case to Case Basis पर और अधिक भी दिया जाएगा।

इस MoU Signature कार्यक्रम के दौरान अल्पसंख्यक योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री कांतिकुमार जैन एवं राष्ट्रीय युवा कार्यकारिणी समिति सदस्य श्री अतुल कुमार जैन भी उपस्थित थे। इस मौके पर राष्ट्रीय युवा महामंत्री ने अस्पताल मैनेजमेंट का धन्यवाद देते हुए बताया कि देश भर Gazetted जैन माइनॉरिटी में कई ऐसे परिवार है जिन्हें इस सुविधा से अत्यंत सुलभ तरीके से चिकित्सा एवं शिक्षा में लाभ होगा। देश के विविध प्रांतो में जमीनी स्तर पर कार्य करते हुए Medical Discount कार्ड्स और Education Discount कार्ड के विषय में चर्चाए प्रगतिपथ पर है। आने वाले समय में देशभर के कई शहरों में ऐसे MOU Sign करके जैन समाज को अधिक से अधिक लाभ पहुँचाने के उद्देश्य से यह कार्य प्रगति पथ पर है। FIRST PHASE ROLL OUT में जल्द ही, छत्रपति संभाजीनगर में शहर के 500 परिवारों के लिए Health Cards वितरण शुरू किए जाएंगे।

प्रेषक : अमित कुमार जैन

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

कथा-कहानी | योगिराज की कहानियाँ-प्रवर्तक श्री सुभद्र मुनि

कार्य का विभाजन

एक सेठ था। बहुत धनवान् था। उसके चार पुत्र थे। चार ही पुत्रवधुएँ थी। पत्नी एक अर्सा हो गया था तभी स्वर्गवासी हो चुकी थी। उसने सोचा - जीवन में धन तो बहुत कमाया है। घर में सब प्रकार के सुख के साधन भी हैं। पत्नी मुझसे पहले ही दुनिया से चली गई ! उसे अभी रहना चाहिए था। बहू-बेटों का सुख देखती, पर मौत के आगे किसका बस चले।

फिर एक दिन उसके दिल में विचार पैदा हुआ बूढ़ा हो गया हूँ। किसी भी दिन आँख मुँद जाएगी पर दिल में यह ख्याल बना रहेगा - मेरे पीछे मेरे घर की देख-भाल कौन-सी बहू अच्छी तरह करेगी। परीक्षा करके देख लिया जाये तो कम से कम संतोष तो रहेगा। जिसे ठीक समझूँगा अपने हाथ से ही सारी व्यवस्था समझा कर चाबी सौंप दूँगा।

सेठ ने एक दिन चारों बहुओं को बुलाया और चारों को पाँच-पाँच धान के दाने दे दिए। कहा - इन्हें सम्भाल कर रखना। चारों बहुओं ने धान के दाने ले लिए और अपने-अपने ढंग से सोचने लगी। एक का नाम था उज्झिका, दूसरी का भोगवती, तीसरी का रक्षिका एवं चौथी का नाम रोहिणी।

उज्झिका ने सोचा - ससुर जी बूढ़े हो गए हैं। जो मन में आता है, बोल देते हैं। क्या करें, अब इन पाँच दानों का? क्या हो सकता है? उसने वे दाने यों ही पटक दिये। झाड़ू लगी, बाहर फिंक गए।

भोगवती ने पाँच दानों को ससुर के हाथ का प्रसाद मानकर मुँह में डाल लिया। रक्षिका ने उन्हें उठाकर रख दिया। सोचने लगी - कभी भी ससुर जी पूछ बैठेंगे वे दाने कहाँ हैं तो निकालकर दे तो दूँगी।

रोहिणी ने ससुर के हाथ से धान के दाने लेते ही सोचा - ससुर जी इतने बड़े अनुभवी और बुद्धि के धनी हैं। उनके द्वारा बहुओं को धान के दाने दिए जाने का निश्चित रूप से कोई अर्थ है। बहुत संभव है यह हमारी बुद्धि परीक्षा के लिए ही उन्होंने किया हो। ऐसा सोचकर रोहिणी ने उन धानों को बो दिया। थोड़े दिनों में अंकुर फूट आये। उनकी सुरक्षा की। समय पर धान पका। अगली बार फिर पाँच धान से उत्पन्न धान को बो दिया। ऐसा करते वर्षों बीत गए।

एक दिन पुत्रवधुओं को सेठ ने फिर सुबह ही सुबह अपने पास बुलाया। जब पुत्रवधुएँ आ गईं तो सेठ ने बहुओं से प्रश्न किया - मैंने तुम सबको पाँच-पाँच दाने दिये थे, उनका तुमने क्या किया? कहाँ हैं वे दाने?

उज्झिका उन्हें झाड़ू में बुहार कर फेंक चुकी थी। भोगवती खा चुकी थी। इन दोनों ने अपनी बात ससुर को कह दी। रक्षिका ने सम्भाल कर रखे थे। वह उमंग में भरी, पहुँची और चाँदी की डिबिया खोलकर वे ही धान के दाने ससुर के हाथ पर रख दिये।

रोहिणी की बारी आई तो वह बोली - ससुर जी वे पाँच दाने गाड़ियों में आ सकते हैं। उन्हें एक आदमी उठाकर नहीं ला सकता।

ससुर ने पूछा - पाँच दाने गाड़ी भर कैसे हो गए?

रोहिणी ने कहा - मैंने उन्हें न खोया है, न खाया है न उठाकर रखा है, मैंने तो उन्हें बोकर बढ़ाये हैं। इसीलिए उन पाँच दानों को लाने के लिए गाड़ियाँ चाहिए।

सेठ की बूढ़ी आँखों में रोहिणी की बात सुनकर आँसू छलक पड़े।

उसने निर्णय किया - जो फेंकने में कुशल है वह (उज्झिका) घर की सफाई व्यवस्था को संभालेगी। खाने में कुशल भोगवती रसोई बनाया करेगी और रक्षिका को मैं कोष सौंपता हूँ। वह उसकी सम्यक् प्रकार से रक्षा करेगी। रोहिणी के लिए सेठ ने कहा - इस घर की प्रमुखा तुम रहोगी। क्योंकि इसकी प्रतिष्ठा धन-वैभव सबकी अभिवृद्धि तुम ही कर सकती हो। यह कहकर सेठ ने चाबी का पूरा गुच्छा उसे पकड़ा दिया।

पति के लिये चरित्र, संतान के लिये ममता, समाज के लिये शील, विश्व के लिये दया, जीव मात्र के लिये करुणा संजोने वाली प्रकृति का नाम नारी है।

श्रमण संघ हो अविचल मंगल - प्रवर्तक पू. डॉ. राजेन्द्र मुनि जी म.सा.

(गतांक से आगे)

भविष्य की व्यवस्था हेतु विभिन्न मुनिराजों को मंत्री पद प्रदान किए गए। इस सम्मेलन में 22 सम्प्रदायों का विलिनीकरण इस संघ में किया गया। यह पवित्र दिन था वैशाख शुक्ला अक्षय तृतीया का जो इतिहास के स्वर्ण पृष्ठों में सदा है व रहेगा। इसी सम्मेलन में उपाचार्य पद पर पूज्य श्री गणेशीलाल जी म. प्रतिष्ठित किए गए। विभिन्न समितियाँ, विभिन्न विषयों के निराकरण हेतु बनाई गयी। इसी कार्यवाही को आगे बढ़ाते हुए, पाली नगर के निकट सोजत सिटी में मंत्री मुनिराजों का एक सम्मेलन सम्पन्न हुआ। यह समय था विक्रम संवत् 2012 का, इस सोजत सम्मेलन में भी बड़ी संख्या में मुनिराज महासतीवृंद व हजारों श्रावकगण उपस्थित रहे। इसी सम्मेलन की प्रेरणा से पुनः एक सम्मेलन आयोजित किया गया। भीनासर साधु-सम्मेलन 1956 चैत्र शुक्ला एकम के शुभ दिन आयोजित इस सम्मेलन में भी 51 प्रतिनिधि मुनिराजों में से 42 प्रतिनिधि मुनिराज पधारे, जितना बड़ा धर्म संघ उतनी बड़ी समस्याएं भी उपस्थित रहती है। फिर भी सकारात्मक दृष्टि से समाधान भी सहज है। इधर प्रथम आचार्य सम्राट आत्माराम जी म. का सं. 2009 से 2019 तक का शासन संचालन बराबर चलता रहा। अचानक आपश्री का सं. 2019 में देवलोक गमन हो गया।

संघ में पुनः भावी भविष्य को लेकर सम्मेलन की चर्चा प्रारम्भ हुई, फलस्वरूप संघ का वृहद् साधु-सम्मेलन सन् 1964 अजमेर में आयोजित किया गया। अपार उत्साह उमंग लिए इस साधु-सम्मेलन में संघ के बड़ी संख्या में मुनिराजों व महासाध्वी जी का पदार्पण हुआ एवं द्वितीय पट्टधर के रूप में शान्त दान्त गुण गंभीर पूज्य श्री आनन्दऋषि जी म. को आचार्य पद की चादर समर्पित की गई। आपश्री के सान्निध्य में संघ में नई ऊर्जा संचारित हुई।

संघ समाज की भविष्य में रूपरेखा तय करने हेतु सन् 1987 में पूना साधु-सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें मेरे आराध्य गुरुदेव व उपाध्याय गुरुदेव श्री पुष्करमुनि की म. के विद्वान शिष्य श्री देवेन्द्रमुनि जी म. को उपाचार्य पद एवं ध्यान योगी पू. श्री शिवमुनि जी म. को युवाचार्य पद सर्वसम्मति से प्रदान कर आदर की चादर प्रदान की गई। दि. 30 अप्रैल से 13 मई तक सम्मेलन में संघ एकता के अनेकानेक प्रस्ताव पारित किए गए। आनंद भगवन के सान्निध्य में हमारा संघ तरक्की करता गया, वृद्धावस्था के चलते आपश्री का स्वास्थ्य साथ नहीं दे पाया। दिनांक 28 मार्च 1992 में आपश्री अहमदनगर में देवलोक पधार गए। आचार्य सम्राट् देवेन्द्र मुनि जी म. को उपाचार्य पद से आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया गया, जिसका विधिवत चादर समारोह 28 मार्च 1993 में आपश्री की जन्मभूमि उदयपुर में आयोजित किया गया।

श्रमण संघ के करीब दो सौ साधु-साध्वी जी व उपाध्याय, प्रवर्तक महामंत्री सलाहकार, पदाधिकारी मुनिराज पधारे। तृतीय पट्टधर आचार्य सम्राट देवेन्द्र मुनिजी म., मधुरभाषी सरलमना, साहित्यकार के रूप में प्रख्यात रहे दिल्ली, पंजाब, जम्मू, हरियाणा हिमाचल, राजस्थान, मध्य प्रदेश की यात्रा अनवरत प्रारम्भ रही। सन् 1999 में मुम्बई पधारे, अचानक स्वास्थ्य बिगड़ा व 26 अप्रैल को देवलोक पधार गए। मेवाड़ संघ व जैन कॉन्फ्रेंस आदि की सेवा रही। एक विराट व्यक्तित्व का असमय चले जाना संघ, समाज व हम शिष्यों के लिए असहनीय रहा। श्रमण संघ के युवाचार्य पद पर विराजमान ध्यान योगी का पू. श्री शिवमुनि जी म. चतुर्थ पट्ट पर विराजमान हुए, जिनका चादर समारोह सन् 2001 में विधिवत देश की राजधानी दिल्ली ऋषभ विहार में बड़ी संख्या में साधु-साध्वी जी की श्रावकों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ।

आपके सान्निध्य में वर्तमान में हमारा श्रमण संघ उन्नति के शिखर पर अग्रसर है। संघ सम्मेलन की पुनः भावना जागृत होने लगी। परिणामस्वरुप मध्य प्रदेश की धर्मनगरी में आपश्री के पावन सान्निध्य में इन्दौर शहर में साधु-सम्मेलन आयोजित किया गया। सन् 2015 का यह ऐतिहासिक साधु-सम्मेलन 20 मार्च से प्रारम्भ होकर 29 मार्च तक चलता रहा, जिसमें भारत भर से पदाधिकारी मुनिराजों के अलावा संत-सतीवृन्द लगभग पाँच सौ की संख्या में दूर प्रान्तों से पधारे। सामूहिक प्रवेश व सामूहिक वार्तालाप का क्रम चलता रहा। अनेकानेक संघ हित में प्रस्ताव पारित किए गए।

इसी अवसर पर आचार्यश्री द्वारा युवाचार्य पद पर पूज्य श्री महेन्द्रऋषि जी म. की उद्घोषणा की गई। इस प्रकार हमारा यह श्रमण संघ आचार्य, युवाचार्य, उपाध्याय, सलाहकार, प्रवर्तक, प्रवर्तिनी, मंत्री, महामंत्री मुनिराजों के साथ दिन-दिन विकास पथ पर अग्रसर है। वर्तमान समय संघ संगठन का समय है। संघे शक्ति कलौ युगे की भावना को आत्मसात करते हुए हमें आगे बढ़ना है। यह वर्ष श्रमण संघ का अमृत वर्ष है। इस 75वें अमृत काल के सुअवसर पर जहाँ श्रमण संघ का निर्माण हुआ उस पावन माटी लोंकाशाह गुरुकुल सादड़ी में एक भव्य आयोजन सादडी संघ व जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा सन् 2027 में आयोजित है। इस अवसर पर श्रमण संघीय पदाधिकारी मुनिराज महासतीवृन्द व बड़ी संख्या में श्रावक समुदाय एकत्रित होगा। हमारी बहुत-बहुत मंगल कामना-भावना समर्पित है।

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन महासंघ, दिल्ली के चुनाव सफलतापूर्वक सम्पन्न

दिल्ली : श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन महासंघ, दिल्ली के चुनाव रविवार, 14 जून को शांतिपूर्ण, सुव्यवस्थित एवं लोकतांत्रिक वातावरण में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुए। इस अवसर पर श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए चुनाव प्रक्रिया से जुड़े सभी पदाधिकारियों, अधिकारियों एवं प्रतिभागियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ प्रेषित की। जैन कॉन्फ्रेंस ने कहा कि किसी भी सामाजिक संगठन की वास्तविक शक्ति उसकी लोकतांत्रिक परम्पराओं, संगठनात्मक अनुशासन तथा सदस्यों की सक्रिय सहभागिता में निहित होती है। इस दृष्टि से महासंघ, दिल्ली के चुनाव समाज की एकता, परिपक्वता एवं संगठन के प्रति समर्पण का प्रेरक उदाहरण हैं।

इस अवसर पर चुनाव प्रक्रिया को निष्पक्षता एवं सुव्यवस्था के साथ सम्पन्न कराने वाले सभी चुनाव अधिकारियों का अभिनन्दन किया गया तथा चुनाव मैदान में उतरने वाले सभी प्रत्याशियों की लोकतांत्रिक भावना की सराहना की गई। संदेश में कहा गया कि जीत और हार क्षणिक होती हैं, जबकि समाजहित एवं संगठन की मजबूती के लिए किया गया कार्य स्थायी महत्व रखता है। जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय महामंत्री डॉ. अमितराय जैन ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री शांति कुमार जैन (शालीमार बाग) एवं महामंत्री श्री नरेन्द्र कुमार जैन (पश्चिम विहार) को शुभकामनाएँ देते हुए विश्वास व्यक्त किया कि उनके कुशल नेतृत्व में महासंघ, दिल्ली संगठनात्मक एकता को और सुदृढ़ करेगा तथा समाज के विकास, युवा सहभागिता और जनकल्याण के क्षेत्र में नई उपलब्धियाँ स्थापित करेगा।

प्रेषक : राजेश कुमार मिश्र

प्रमाद से प्रमोद

सजग जीवन की साधना

पुस्तक से साभार

लेखक-गुरुभक्त अतुल जैन

(गतांक से आगे)

अध्याय 22

मूलाधार की असुरक्षा - जड़ का कंपन

(गहन विस्तार)

यदि नाभि अस्तित्व का केंद्र है, तो मूलाधार जड़ है। नाभि में भय की लहर उठती है। मूलाधार में आधार का कंपन अनुभव होता है। मूलाधार स्थिरता, सुरक्षा, भूमि से जुड़ाव और अस्तित्व के मूल भरोसे से संबंधित है। जब जीवन की जड़ें अस्थिर हों, तो पूरा वृक्ष हिलता है।

1. मूलाधार का अर्थ : मूलाधार का सीधा अर्थ है-मूल आधार। यह शरीर का सबसे निचला ऊर्जा केंद्र है। यह स्थिरता, धैर्य, धारण-शक्ति और अस्तित्व पर भरोसे का प्रतीक है। जब यह संतुलित हो, तो व्यक्ति भीतर से Grounded होता है।

2. असुरक्षा की जड़ : अक्सर जीवन में जो असुरक्षा दिखती है, वह सतह पर होती है। पर उसकी जड़ मूलाधार में होती है। "मैं सुरक्षित नहीं हूँ।" "मेरा आधार कमजोर है।" "मुझे सब संभालना है, वरना मैं गिर जाऊँगा।" यह सूक्ष्म धारणा जीवन को निरंतर सतर्कता में रखती है।

3. प्रारंभिक अनुभवों का प्रभाव : बचपन के अनुभव, अचानक हुए झटके, आर्थिक या भावनात्मक अस्थिरता-ये सब मूलाधार में छाप छोड़ सकते हैं। व्यक्ति बाहर से सफल दिख सकता है, पर भीतर एक सूक्ष्म अस्थिरता बनी रह सकती है। यह अस्थिरता प्रमाद को जन्म देती है।

4. नियंत्रण की जिद और मूलाधार : जब आधार में भरोसा कम होता है, तो व्यक्ति बाहर व्यवस्था बनाकर सुरक्षा खोजता है। वह संपत्ति, पद, पहचान, प्रभाव इन सबको आधार बना लेता है। परंतु बाहरी आधार भीतरी आधार की जगह नहीं ले सकता।

5. शरीर में संकेत : मूलाधार की असुरक्षा के संकेत हो सकते हैं-निचली कमर में तनाव पैरों में भारीपन या कमजोरी स्थिर न बैठ पाना लगातार सतर्कता ये सब शरीर की भाषा है।

6. भूमि से जुड़ाव : मूलाधार का संतुलन भूमि से जुड़ाव से आता है। धीरे-धीरे चलना। नंगे पाँव धरती पर चलना। बैठकर श्वास को नीचे तक ले जाना। जब ध्यान नीचे उतरता है, तो मन का शोर कम होता है।

7. भरोसे का पुनर्जन्म : मूलाधार का वास्तविक उपचार है-भरोसा। यह बौद्धिक विश्वास नहीं है। यह अस्तित्व में भरोसा है। "मैं समर्थ हूँ।" "जीवन मुझे धारण कर रहा है।" "मुझे हर क्षण सब नियंत्रित नहीं करना है।" यह स्वीकृति जड़ को स्थिर करती है।

8. ऊर्जा का अवरोहण : अक्सर व्यक्ति की ऊर्जा सिर में केंद्रित रहती है। विचार, योजना, चिंता-सब ऊपर। जब ऊर्जा धीरे-धीरे नीचे उतरती है-नाभि से मूलाधार तक-तो स्थिरता बढ़ती है। यह अवरोहण प्रयास से नहीं, स्वीकृति से होता है।

9. भय से विश्वास तक : मूलाधार की असुरक्षा जीवन को संघर्ष बना देती है। विश्वास जीवन को सहयोग बना देता है। जब व्यक्ति भीतर स्थिर हो जाता है, तो बाहरी उतार-चढ़ाव उसे उतना प्रभावित नहीं करते।

10. अंतिम स्पष्टता : मूलाधार की असुरक्षा प्रमाद की गहरी जड़ है। जब जड़ में भरोसा आता है, तो कर्ताभाव ढीला पड़ता है। नियंत्रण नरम होता है। छाती हल्की होती है। अगले अध्याय में हम समझेंगे-नसों का कसाव और सूजन इस ऊर्जा-असंतुलन से कैसे जुड़े हो सकते हैं।

(क्रमशः)

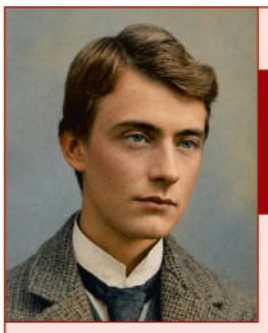

जैन दर्शन के विदेशी विद्वान श्रृंखला

भारतीय संस्कृति और जैन परंपरा के गंभीर अध्येता : एडवर्ड थॉमस

- प्रोफेसर डॉ. आंचल जैन

उन्नीसवीं शताब्दी का काल भारतीय इतिहास और धर्मों के अध्ययन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। इसी दौर में कुछ ऐसे पाश्चात्य विद्वान सामने आए जिन्होंने भारत की प्राचीन सांस्कृतिक परंपराओं को केवल औपनिवेशिक दृष्टि से नहीं, बल्कि एक गंभीर बौद्धिक विषय के रूप में समझने का प्रयास किया। एडवर्ड थॉमस उन चुनिंदा विद्वानों में शामिल थे जिन्होंने जैन धर्म की ऐतिहासिकता, उसकी प्राचीनता तथा भारतीय सभ्यता में उसके योगदान को प्रमाणों के आधार पर प्रस्तुत करने का कार्य किया।

एडवर्ड थॉमस (1814-1886) ब्रिटिश भारत में कार्यरत एक प्रतिष्ठित विद्वान, पुरालेखवेत्ता तथा मुद्राशास्त्र विशेषज्ञ थे। प्रशासनिक सेवाओं में रहते हुए भी उनकी रुचि भारतीय इतिहास, प्राचीन अभिलेखों और सिक्कों के अध्ययन में निरंतर बनी रही। उन्होंने भारत के विभिन्न क्षेत्रों से प्राप्त ऐतिहासिक सामग्री का विश्लेषण कर भारतीय इतिहास के कई ऐसे पक्षों को सामने लाने का प्रयास किया, जिन्हें उस समय तक पर्याप्त महत्व नहीं दिया गया था।

एडवर्ड थॉमस का अध्ययन केवल राजवंशों की राजनीतिक घटनाओं तक सीमित नहीं था। वे भारतीय संस्कृति को उसके धार्मिक प्रतीकों, अभिलेखीय परंपरा और आर्थिक इतिहास के माध्यम से समझना चाहते थे। प्राचीन सिक्कों पर अंकित प्रतीकों, लिपियों और चिह्नों के आधार पर उन्होंने यह स्थापित करने का प्रयास किया कि भारतीय धार्मिक परंपराएँ अत्यंत विकसित और संगठित स्वरूप में प्राचीन काल से विद्यमान थी।

उनका मानना था कि इतिहास की वास्तविक समझ केवल साहित्यिक स्रोतों से नहीं, बल्कि भौतिक प्रमाणों-जैसे सिक्कों, शिलालेखों और स्थापत्य अवशेषों-से भी निर्मित होती है। यही कारण है कि उनके शोध भारतीय मुद्राशास्त्र और कालक्रम निर्धारण के क्षेत्र में अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुए।

जैन धर्म की प्राचीनता के पक्ष में शोध : एडवर्ड थॉमस ने विशेष रूप से जैन धर्म से संबंधित ऐतिहासिक संकेतों को गंभीरता से लिया। उस समय यूरोपीय विद्वानों के बीच यह धारणा प्रचलित थी कि जैन धर्म अपेक्षाकृत बाद की धार्मिक धारा है, किंतु थॉमस ने अपने अध्ययन में इस दृष्टिकोण को चुनौती दी। उन्होंने प्राचीन भारतीय सिक्कों पर अंकित चिह्नों तथा उपलब्ध अभिलेखीय साक्ष्यों का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए यह संकेत दिया कि जैन परंपरा भारत की अत्यंत प्राचीन धार्मिक धारा रही है। उनके अनुसार जैन धर्म का प्रभाव केवल आध्यात्मिक जीवन तक सीमित नहीं था, बल्कि उसने सामाजिक और राजनैतिक संरचनाओं को भी प्रभावित किया।

विशेष रूप से मौर्यकाल और उससे पूर्व के संदर्भों में उनके द्वारा प्रस्तुत विचारों ने जैन इतिहास के अध्येताओं को नए विमर्श प्रदान किए। उन्होंने इस संभावना को बल दिया कि जैन परंपरा का संबंध प्राचीन भारतीय सत्ता संरचनाओं से भी रहा है और उसका प्रभाव तत्कालीन राजसत्ता तक विस्तृत था।

चंद्रगुप्त मौर्य और जैन परंपरा : एडवर्ड थॉमस ने उन ऐतिहासिक परंपराओं की ओर भी ध्यान आकर्षित किया जिनमें चंद्रगुप्त मौर्य के जैन धर्म से संबंधों का उल्लेख मिलता है। उनके अध्ययन ने इस विषय को अकादमिक विमर्श में गंभीरता से स्थापित करने में सहायता की। इससे जैन परंपरा से जुड़े दक्षिण भारत के ऐतिहासिक केंद्रों, विशेषकर श्रवणबेलगोला, के महत्व को भी नई दृष्टि प्राप्त हुई।

जैन अध्ययन की वैश्विक पृष्ठभूमि तैयार करने में भूमिका : एडवर्ड थॉमस का महत्व केवल उनके व्यक्तिगत शोध तक सीमित नहीं है। उन्होंने पश्चिमी जगत में जैन धर्म के अध्ययन की जो वैचारिक पृष्ठभूमि तैयार की, उसी के आधार पर आगे चलकर अनेक विद्वानों ने जैन आगम, प्राकृत साहित्य, जैन दर्शन और पुरातत्व पर विस्तृत कार्य किया।

उनकी प्रसिद्ध कृति "Jainism, or The Early Faith of Asoka" उस समय के बौद्धिक वातावरण में जैन धर्म को एक स्वतंत्र दार्शनिक परंपरा के रूप में स्थापित करने की दिशा में उल्लेखनीय प्रयास थी। इससे यह धारणा मजबूत हुई कि भारतीय संस्कृति का विकास अनेक समृद्ध धार्मिक और दार्शनिक धाराओं के सामूहिक योगदान से हुआ है।

एडवर्ड थॉमस उन विदेशी विद्वानों में गिने जाते हैं जिन्होंने भारतीय परंपराओं को केवल रहस्यवाद या मिथकीय दृष्टि से नहीं देखा, बल्कि उन्हें ऐतिहासिक और प्रमाणिक आधारों पर समझने का प्रयास किया। उनके शोधों ने यह स्पष्ट किया कि जैन धर्म भारतीय सांस्कृतिक चेतना का अभिन्न अंग रहा है और उसकी परंपरा अत्यंत प्राचीन एवं समृद्ध है।

आज, जब भारतीय ज्ञान परंपरा और जैन विरासत के पुनर्मूल्यांकन की आवश्यकता अनुभव की जा रही है, तब एडवर्ड थॉमस जैसे विद्वानों के कार्य विशेष महत्व रखते हैं। उनका अध्ययन यह प्रमाणित करता है कि भारतीय इतिहास की व्यापक समझ बिना जैन धर्म और उसकी बौद्धिक परंपरा को समुचित स्थान दिए संभव नहीं है।

योग : स्वस्थ शरीर से संतुलित जीवन तक

- रमेश भंडारी जैन-चेयरमैन विश्वस्त मंडल

तेजी से बदलती जीवनशैली, बढ़ता तनाव और अनियमित दिनचर्या आज अनेक शारीरिक एवं मानसिक समस्याओं का कारण बन रही हैं। ऐसे समय में योग एक सम्पूर्ण जीवन पद्धति के रूप में उभरकर सामने आया है। योग शरीर को लचीला और स्वस्थ बनाता है, श्वास को संतुलित करता है तथा मन को शांत करता है। नियमित योगाभ्यास से तनाव कम होता है, एकाग्रता बढ़ती है और जीवन में सकारात्मकता का विकास होता है। किन्तु भारतीय दर्शन में योग केवल व्यायाम नहीं है। यह शरीर, मन और आत्मा के बीच सामंजस्य स्थापित करने की प्रक्रिया है। जब योग के साथ संयम, सदाचार, सकारात्मक सोच और आत्मजागरूकता जुड़ जाती है, तब उसका प्रभाव और अधिक व्यापक हो जाता है।

योग दिवस हमें केवल एक दिन योग करने की प्रेरणा नहीं देता, बल्कि स्वस्थ, संतुलित और जागरूक जीवन जीने का संकल्प प्रदान करता है। यदि योग को दैनिक जीवन का हिस्सा बनाया जाए, तो व्यक्ति, परिवार और समाज-तीनों का जीवन अधिक सुखद और संतुलित बन सकता है।

प्रेस्टीज

प्रतिबद्ध है भारत को समृद्ध एवं प्रबुद्ध बनाने के लिये अपने
सर्वश्रेष्ठ सोया प्रोटीन सोया तेल, वनस्पति, सोया बड़ी गेहूँ का आटा
मैदा, रवा, सूजी और उत्कृष्ट शिक्षा K.G. से Ph.D. के द्वारा
भारत को जरूरत है स्वर्ण पदकों की ओलम्पिक
और नोबल पुरस्कार विजेताओं की
स्वस्थ व प्रबुद्ध भारत के लिये
प्रेस्टीज सोया खाद्य और समग्र शिक्षा
बेहतर भोजन - बेहतर शिक्षा - बेहतर राष्ट्र

प्रेस्टीज फूड्स लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड रिसर्च, इंदौर (अंडर ग्रेजुएट्स)
प्रेस्टीज फीड मिल्स लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड रिसर्च, इंदौर (पोस्ट ग्रेजुएट्स)
प्रेस्टीज सोया इंडस्ट्रीज	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, ग्वालियर
प्रेस्टीज फ्रोटेक लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, देवास
प्रेस्टीज फीड मिल्स	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड साइंस, इंदौर
प्रेस्टीज फैब्रिकेटर्स प्रा. लिमिटेड	प्रेस्टीज पब्लिक स्कूल, इंदौर

प्रेस्टीज ग्रुप ऑफ इन्डस्ट्रीज एंड इंस्टीट्यूट्स

स्टार एक्सपोर्ट हाउस (भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त) आई.एस.ओ. : 9000 2001 प्रमाणिक ग्रुप

30, Jaora Compound, M.Y.H. Road, Indore - 452001, M.P.

Phone.: 0731-4011111, 4041111 Fax: 4011107, 2704455 E-mail: info@prestigeindia.com Website: prestigeindia.com

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

भगवान महावीर का आत्मयोग : भीतर की यात्रा

- प्रशांत जैन 'गांधरा'-राष्ट्रीय मुख्य समन्वयक

योग का वास्तविक उद्देश्य केवल शरीर को स्वस्थ बनाना नहीं, बल्कि आत्मा को उसके शुद्ध स्वरूप से जोड़ना है। भगवान महावीर का सम्पूर्ण जीवन आत्मयोग की सर्वोच्च साधना का उदाहरण है। उन्होंने बाहरी परिस्थितियों को बदलने के बजाय स्वयं को बदलने का मार्ग दिखाया।

महावीर स्वामी ने बताया कि मनुष्य के सभी दुःखों का मूल कारण बाहरी संसार नहीं, बल्कि उसके भीतर के राग, द्वेष, क्रोध, मान, माया और लोभ हैं। इन विकारों पर विजय प्राप्त करना ही वास्तविक योग है। इसलिए जैन दर्शन में योग का अर्थ आत्मसंयम, आत्मनिरीक्षण और आत्मजागरण से है।

समता, मौन, ध्यान और जागरूकता के माध्यम से भगवान महावीर ने आत्मा की अनंत शक्तियों को प्रकट करने का मार्ग बताया। आज भी यदि व्यक्ति प्रतिदिन कुछ समय स्वयं को देखने, अपने विचारों को समझने और अपने भावों को शुद्ध करने में लगाए, तो उसका जीवन अधिक शांत, संतुलित और आनंदमय बन सकता है।

योग दिवस के अवसर पर महावीर का संदेश हमें याद दिलाता है कि सबसे बड़ी यात्रा बाहर की नहीं, बल्कि भीतर की यात्रा है।

समायिक : केवल 48 मिनट में स्वयं से मिलने का अवसर

- नरेश आनंद प्रकाश जैन-ज्ञान प्रकाश योजना राष्ट्रीय अध्यक्ष

आज विश्व मानसिक तनाव, चिंता और असंतुलन से जूझ रहा है। ऐसे समय में जैन धर्म की प्राचीन साधना "समायिक" अत्यंत प्रासंगिक बन जाती है। समायिक केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि मन को स्थिर और संतुलित बनाने की एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है।

समायिक का अर्थ है समभाव में स्थित होना। लगभग 48 मिनट तक व्यक्ति अपने दैनिक कार्यों, चिंताओं और बाहरी पहचान से ऊपर उठकर स्वयं को देखने का प्रयास करता है। इस अवधि में वह न मित्र देखता है, न शत्रु, न लाभ देखता है, न हानि केवल साक्षी भाव में रहने का अभ्यास करता है।

आधुनिक मनोविज्ञान जिस माइंडफुलनेस और मानसिक संतुलन की बात करता है, उसका उत्कृष्ट स्वरूप जैन परंपरा में सदियों से समायिक के रूप में विद्यमान है। नियमित समायिक व्यक्ति को धैर्यवान, सकारात्मक और आत्मनियंत्रित बनाती है। योग दिवस पर समायिक की परंपरा हमें बताती है कि वास्तविक योग स्वयं को देखने और समझने की कला है।

(पृष्ठ 1 का शेष 'जैन दर्शन में योग')

योग में मन, वचन, काया को स्थिर करके इसके पार जाकर जीव निर्विचार, निर्विकल्प समाधि को प्राप्त करता है और उस स्थिति में वह अज्ञान दशा में बांधे पूर्व के सभी कर्मों को क्षय करता है। नवीन कर्मों के बंधनों को रोकता है और वर्तमान में अनंत सुख का अनुभव करता है।

आत्मा अक्रिय, अलिप्त है। अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत सुख, अनंत शक्ति से परिपूर्ण है। निराकार है, अगुरु लघु अर्थात् न हल्का न भारी है, क्षायिक समकित वाला अर्थात् अस्तित्व आत्मा का है, यही आत्मा ध्यान और कायोत्सर्ग की साधना से सर्व कर्म क्षय कर अटल अवगाहना अर्थात् अपनी आत्मा को मुक्त कर सिद्धशिला में स्थित करता है।

इसकी साधना का प्रारंभ भेद विज्ञान से होता है और अस्तित्व पर बोध प्राप्त कर जीव अस्तित्व पर श्रद्धा करता है, अस्तित्व में स्थित रहकर यह जीव वर्तमान में मुक्ति का अनुभव करता है और अंततः सर्व कर्मों को क्षय कर अपने लक्ष्य को प्राप्त करता है। इसका प्रायोगिक अध्ययन अरिहंत कृपा से आत्म ध्यान धर्म यज्ञ में प्रदान किया जाता है। जिज्ञासु साधक धर्म यज्ञ में सहभागी होकर स्वयं को मुक्त दशा की ओर अग्रसर कर सकते हैं।

सूचना - जैन छात्रों के लिए वार्षिक फीस में छूट

तिरुतनी के निकट Itchi Puttur गाँव में, M.R.F. Tyre Factory के पास श्वेताम्बर स्थानकवासी जय गच्छीय सम्प्रदाय द्वारा स्थापित J.P.P. जैन विद्याश्रम वर्तमान में LKG से सातवीं कक्षा तक CBSE सिलेबस के अनुसार शिक्षा प्रदान कर रहा है। विद्यालय प्रबंधन ने निर्णय लिया है कि जैन समाज के बच्चों से केवल 10,000/- वार्षिक शिक्षण शुल्क लिया जाएगा।

निकटवर्ती जैन परिवारों से विनम्र आग्रह है कि वे अपने बच्चों को जयमल पारस पदम जैन विद्याश्रम में प्रवेश दिलाएँ, ताकि उन्हें संस्कारयुक्त एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त हो सके। संस्थान का लक्ष्य है कि आने वाले वर्षों में हर साल एक कक्षा बढ़ाते हुए शिक्षा को बारहवीं (+2) तक विस्तारित किया जाएगा।

- विमलचन्द सांकला, तिरुवल्लूर (78714 34949)

पता : J.P.P. Jain Vidyaashram Itchi Puttur (गाँव) M.R.F. Tyre Factory के पास Tirutani - Arkonam (तहसील) Ranipet (तमिलनाडु)

जीवन का संयमित आधार - धर्म

- रजनीष जैन 'राज', राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष, जैन कॉन्फ्रेंस

धर्म व्यक्ति के चिन्तन को सदा संयमित आधार देने का एक सशक्त आलम्बन माना गया है और जीवन में धर्म का यही संयमित एवं नियंत्रित आलम्बन हमें अनेक विडम्बनाओं से बचाने का निमित्त भी बन जाता है। धर्म पालन को हम शुभता का वास्तविक समुचय भी मान सकते हैं, जिससे व्यर्थ के विचारों का जहाँ स्वतः परित्याग होने लगता है वहीं जीवन में अनीति का उन्मूलन होकर नीति का प्रादुर्भाव होने लगता है। इससे यह सिद्ध होता है कि धर्म मनुष्य जीवन का उत्तम आश्रय तो है ही साथ ही मनुष्य जीवन का मूलभूत आधार भी है। इसलिए कहा गया है कि जीवन में धर्म रूपी कर्म पर विश्वास करते हुए इसे अपनाना अत्यावश्यक है।

यूँ भी हमारा अवचेतन मन हमारे भीतर व्याप्त दैवीय शक्तियों का उद्गम स्थल कहा गया है जोकि ईश्वर प्रदत्त क्षमताओं का आधार माना जा सकता है। मनुष्य के अंतर में व्याप्त इन अव्याबाध क्षमताओं का आंकलन केवल मात्र उसके जीवन में रहा एक सच्चा मार्गदर्शक ही कर सकता है। हमारी आत्मा को, विचारों को, चेतन मन को जाग्रत करने हेतु मनुष्य जीवन में सच्चा हितैषी होना परम आवश्यक है, जो कि जीवन में शुचिता को पाने का, जीवन को व्यवस्थित बनाने का प्रबल माध्यम हो।

सच्चे हृदय से अनुभव की जाने वाली धर्म की रंच मात्र स्फूर्णा भी चेतन हृदय को जहाँ सशक्तता प्रदान करने का कार्य करती है वहीं व्यक्ति जीवन में उच्चता को पाने का, अपनाने का नैसर्गिक पात्र बनने लगता है। जिससे कि जैसा मैंने लेख के पूर्व में उद्धृत किया है और पुनः कहना चाहूँगा कि इन्हीं चर्याओं को अपनाने से व्यक्ति जीवन में एक संयमित आधार को पा लेता है। जिस प्रकार प्रकृति नव-अंकुरण द्वारा स्वयं का शृंगार करती है ठीक उसी प्रकार व्यक्ति जीवन में जप-तप को अपनाकर स्वयं को कई मायनों में निखारने का कार्य कर सकता है। स्वाभाविक है कि धर्म भावनाओं को अपनाने से, जीवन में उनका दैनिक रूप से पालन करने से व्यक्ति का भावनात्मक एवं मानसिक विकास होता है। धर्म चर्या का पालन करने के दौरान पालन की जाने वाली यौगिक क्रियाओं से शरीर की आरोग्यता भी असंदिग्ध हो जाती है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि धर्म आराधना करने से, अपनाने से हमें निश्चित रूप से शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक रूप से परिपक्व होने का सबब भी मिलता है।

यानि जो व्यक्ति धर्म की राह पर दृढ़ रहता है, उससे ईश्वर भी प्रीति रखता है। संक्षेप में, हम कह सकते हैं कि, व्यक्ति कुछ भी कर पाने में सक्षम है, चाहे वह उसके जीवन में हो अथवा सपनों में शामिल हो। बस उसकी मनःस्थिति प्रबल होनी चाहिए क्योंकि व्यक्ति भी ब्रह्माण्ड की ही तरह अनन्त सम्भावनाओं से परिपूर्ण है।

(पृष्ठ 1 का शेष 'सम्पादकीय')

यह विशेष रूप से विचारणीय है कि देश के अनेक राजनीतिक दल और उनके शीर्ष नेता समय-समय पर भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों, उपवास, संयम, नवरात्र, पर्युषण और शाकाहार की महत्ता को सार्वजनिक मंचों से रेखांकित करते रहे हैं। अनेक अवसरों पर शाकाहार को स्वास्थ्य, पर्यावरण और नैतिकता से जोड़कर प्रस्तुत किया गया है। ऐसे में यदि किसी राज्य में शासन का प्रमुख चेहरा मांसाहारी खाद्य पदार्थों के सरकारी प्रोत्साहन को विकास और जनकल्याण का प्रतीक बताता है, तो यह वैचारिक स्तर पर एक प्रकार के अंतर्विरोध को जन्म देता है।

आज विश्व के विकसित देशों में भी शाकाहार और पौध-आधारित आहार को केवल धार्मिक विकल्प नहीं, बल्कि स्वास्थ्य और पर्यावरण संरक्षण के महत्वपूर्ण माध्यम के रूप में देखा जा रहा है। वैज्ञानिक अध्ययनों और अंतर्राष्ट्रीय विमर्शों में यह तथ्य बार-बार सामने आया है कि वनस्पति-आधारित भोजन प्राकृतिक संसाधनों पर अपेक्षाकृत कम दबाव डालता है तथा सतत् विकास की अवधारणा को मजबूत करता है। भारत जैसे देश में, जहाँ महावीर, बुद्ध, कबीर और गांधी की करुणा-परंपरा जीवित है, वहाँ शाकाहार को केवल एक समुदाय विशेष का विषय मानना उचित नहीं होगा।

भगवान महावीर ने कहा था-'सव्वे पाणा पियाऊया' अर्थात् सभी प्राणियों को अपना जीवन प्रिय है। यही भावना जैन संस्कृति का प्राण है। किसी भी जीव के प्रति संवेदना, उसके जीवन के अधिकार का सम्मान और अनावश्यक हिंसा से बचना केवल धार्मिक उपदेश नहीं, बल्कि एक सभ्य समाज की पहचान है।

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस यह अपेक्षा करती है कि शासन और राजनीतिक नेतृत्व अपने निर्णयों तथा सार्वजनिक प्रस्तुतियों में देश की अहिंसक परंपराओं के प्रति भी समान संवेदनशीलता का परिचय दें। यदि क्षेत्रीय आवश्यकताओं के कारण कुछ नीतियाँ बनानी पड़ती हैं, तो भी उनका प्रचार-प्रसार इस प्रकार न हो कि करोड़ों शाकाहारी और अहिंसाप्रेमी नागरिक स्वयं को उपेक्षित अथवा आहत अनुभव करें।

आज आवश्यकता किसी विवाद को जन्म देने की नहीं, बल्कि एक व्यापक राष्ट्रीय संवाद की है। भारत की प्रगति केवल आर्थिक विकास से नहीं, बल्कि उन नैतिक मूल्यों से भी निर्धारित होगी जो समाज को अधिक संवेदनशील, अधिक करुणामय और अधिक मानवीय बनाते हैं। अहिंसा, शाकाहार और जीवदया ऐसे ही मूल्य हैं, जिन्हें राजनीति और शासन दोनों के विमर्श में सम्मानजनक स्थान मिलना चाहिए। यही समय की पुकार है, यही भारतीय संस्कृति का संदेश है और यही जैन समाज की विनम्र अपेक्षा भी।

With Best Wishes :
R.Mahaveer Chand Ranka
Rajesh kumar-Aarti Jain Vinod kumar-Seema Jain
Dr Rohit, Mohit, Shruthi, Shubh kumar, Aditi Jain

JAIN JEWELLERY 916 HALL MARK SHOWROOM POLUR
JAIN SILKS & READYMADES Fashion for Family POLUR
varnalaya EXCLUSIVE DESIGNER WEDDING COLLECTION POLUR TIRUVANAMALAI VILLUPURAM
JAIN PETRO Reliance Petroleum Retail Outlet, Diversion Road, Polur 606-803
OXFORD MATRIC HR. SEC SCHOOL
OXFORD COLLEGE OF ENGINEERING POLUR

R.Mahaveer Chand Ranka
राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक - जैन कॉन्फ्रेंस
9444204046
E mail : rmrjainplr@gmail.com

M. Rajeshkumar Ranka
प्रान्तीय महामंत्री - जैन कॉन्फ्रेंस, तमिलनाडु
9994916455
E mail : rajplr246jj@gmail.com

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

ज्ञान प्रकाश योजना द्वारा विद्यार्थियों हेतु धार्मिक शिविर का आयोजन

सोनीपत (हरियाणा) : श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, ज्ञान प्रकाश योजना, सोनीपत द्वारा दिनांक 09 जून को आयोजित शिविर में आए विद्यार्थियों को जैन धर्म के सिद्धांतों, संस्कारों तथा साधु-साध्वियों के आदर्श जीवन के बारें में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की गई। इस अवसर पर सभी बच्चों को खाने-पीने की विभिन्न वस्तुएँ एवं उपहार भी वितरित किए गए। शिविर 1 जून से 10 जून तक बड़े ही सुचारू रूप से आयोजित किया गया, जिसमें लगभग 50-55 बच्चों ने हिस्सा लिया। इस पुण्य कार्य को सफल बनाने में अध्यक्षा श्रीमती शशि जैन, मंत्री श्रीमती सुदेश जैन, कोषाध्यक्ष श्रीमती लेखिका जैन अन्य अध्यक्षा, श्रीमती ज्योति जैन, श्रीमती लक्ष्मी जैन, मोना जैन आदि सदस्यों का विशेष योगदान रहा। सभी के सहयोग से यह कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

लुधियाना में धर्म, शिक्षा, नवकार मंत्र व नैतिक मूल्यों की जानकारी के शिविर का आयोजन

लुधियाना (पंजाब) : हंबड़ा रोड स्थित गोल्फ लिंक के एस.एस. जैन सभा की ओर से करवाए गए धर्म शिक्षा शिविर में बच्चों ने जैन धर्म की बारिकियों के बारे में जाना। दस दिवसीय शिविर की समाप्ति समारोह की शुरुआत महामंत्र नवकार के मंगलमय उच्चारण, आचार्य भगवंतों के जयघोष से हुई। यह आयोजन रीचा संदीप जैन, राष्ट्रीय महिला महामंत्री के सौजन्य से एवं आर्य भगवती श्री चंदनबाला महिला संघ, गोल्फ लिंक सौजन्य से बड़ी धूमधाम व उत्साहपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ।

शिविर की अध्यक्षता श्वेता जैन ने की। समापन समारोह में एस.एस. जैन सभा के अध्यक्ष सोमप्रकाश जैन, जुगिंदर जैन, निर्मल जैन, सुशील जैन, अमित जैन, शशि जैन, संदीप जैन, विनु जैन, श्वेता जैन, राधिका जैन, शिल्पा जैन एवं शुभलता जैन सहित सभा एवं महिला संघ के अनेक सदस्य उपस्थित रहे। शिविर में 5 से 15 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों को जैन धर्म के सिद्धांतों, नवकार मंत्र, अरिहंत और सिद्ध, भगवान महावीर स्वामी जी के जीवन व उनकी शिक्षाओं से जुड़ी कहानियों, 24 तीर्थंकरों, जैन संस्कृति, नैतिक मूल्यों, अहिंसा, संयम, गुरु भक्ति एवं जीवनोपयोगी संस्कारों की शिक्षा प्रदान की गई, शिविर की अध्यापिका शिल्पा जैन ने बच्चों को धार्मिक एवं संस्कारमय प्रशिक्षण दिया।

प्रेषक : रीचा जैन

रानी बाग दिल्ली में जैन बाल संस्कार शिविर का आयोजन

दिल्ली : रानी बाग में एस.एस. जैन सभा द्वारा 1-10 जून तक जैन बाल संस्कार शिविर का आयोजन हुआ। शिविर में नवकार मंत्र, प्रतिक्रमण व जैन सिद्धांतों का प्रशिक्षण दिया गया। जैन कॉन्फ्रेंस दिल्ली प्रदेश की अध्यक्षा श्रीमती सीमा जैन, महामंत्री श्रीमती कनिका जैन, प्रमुख मार्गदर्शिक श्रीमती सरोज जैन, महिला मंत्री मीनू जैन, महिला संगठन मंत्री दीपिका जैन, प्रियंका जैन सहित कई प्रांतीय आदि बहनें उपस्थित रहीं।

प्रेषक : सीमा जैन

आत्म-ध्यान योजना द्वारा सूचना

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस आत्म-ध्यान योजना की ओर से दिनांक 13 एवं 14 जून को अहिल्यानगर में सामूहिक मिलन, नमन यात्रा एवं राष्ट्रीय कार्यकारिणी सभा का आयोजन किया गया। यह सामूहिक मिलन केवल एक मिलन समारोह नहीं, बल्कि आत्मियता, संगठनात्मक एकता एवं परस्पर सहयोग की भावना को सुदृढ़ करने का एक सशक्त माध्यम है। योजना की राष्ट्रीय कार्यकारिणी सभा हमें संगठन के वर्तमान एवं भावी कार्यों पर चिंतन, मार्गदर्शन एवं प्रभावी निर्णय लेने का अवसर प्रदान करती है। वहीं नमन यात्रा हमारे महापुरुषों के प्रति श्रद्धा, समर्पण एवं संगठन के प्रति नवीन ऊर्जा एवं प्रेरणा का संचार किया। आप सभी आदरणीय राष्ट्रीय पदाधिकारियों की गरिमामयी उपस्थिति इस आयोजन को सफल एवं सार्थक बनाया।

सादर निवेदक : आत्म-ध्यान योजना परिवार

जैन कॉन्फ्रेंस गुजरात प्रांतीय शाखा द्वारा किए गए सेवा कार्यों की गतिविधियाँ

अहमदाबाद (गुजरात) : गरीब गर्भवती महिलाओं को अर्बन हेल्थ सेन्टरों पर इकट्ठा कर पौष्टिक आहार का वितरण, गरीब परिवारों को राशन कीट का वितरण, सिविल हॉस्पिटल एवं मेन्टल हॉस्पिटल में दर्दियों एवं उनके परिजनों को भोजन वितरण, आंगनवाड़ी केन्द्रों में चिल्ड्रन पार्क बनाने का कार्य, स्कूलों में चिल्ड्रन पार्क, विज्ञान प्रयोगशाला, शेड निर्माण एवं वाटर कूलर लगवाने का कार्य, स्कूल में बच्चों को गिफ्ट के रूप में नोटबुक्स का वितरण, गुजरात के सभी श्रीसंघो को साथ रखकर सर्दियों में गाँव-गाँव में जरूरतमंदों को कम्बल वितरण, जीवदया के तहत गौशालाओं में अबोल जीवों को घास, चारा, दूध, रोटी, फल एवं सब्जियाँ खिलाना, जैन साधु-साध्वियों के दर्शन, वैय्यावच्च एवं विहार यात्राओं में शामिल होना, विहारधाम योजना के तहत विहारधाम बनवाने में सहयोग प्रदान करना, ज्ञान प्रकाश योजना के तहत धार्मिक एवं आध्यात्मिक प्रश्नोतरी के माध्यम से सम्पूर्ण गुजरात में परीक्षायें लेकर ज्ञानोपार्जन करना, मानव सेवा योजना के तहत गरीब विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति दिलाना, गरीब महिलाओं को सिलाई मशीने दिलाकर स्वावलम्बी बनाना, गुजरात के सभी सदस्यों को डिजीटल व्हाट्सऐप ग्रुप से जोड़ने का कार्य किया गया, गुजरात के सभी श्रमण संघीय श्रीसंघो के पदाधिकारियों का सम्मेलन सूरत में किया गया। गुजरात में 2025 के चातुर्मास दरम्यान श्री संघो/स्थानकों में सेवा देने वाले सभी स्वाध्यायी भाई-बहन को सम्मान पत्र द्वारा सम्मानित किया गया।

प्रेषक : सम्पत खाब्या जैन

चेन्नई में दो दिवसीय सेवा एवं धर्ममय कार्यक्रम का आयोजन

चेन्नई (तमिलनाडु) : श्रमण संघीय प्रवर्तक श्री रमेशमुनि जी म. के शिष्य उप-प्रवर्तक सिद्धार्थमुनिजी म. के 52वें अवतरण दिवस के उपलक्ष्य में चेन्नई में दिनांक 06.07.2026 को दो दिवसीय सेवा एवं धर्ममय कार्यक्रम का सफल आयोजन किया गया। प्रथम दिवस कबूतरों को दाना सेवा मरीना बीच, अन्नदान सेवा जैन स्थानक मिंट स्थित, गौ सेवा मिंट स्थित गौशाला, हरा चारा विहार सेवा आदि में किया गया। इस अवसर पर पूज्य श्री आदर्शज्योतिजी म. का विशेष आशीर्वाद प्राप्त हुआ। द्वितीय दिवस 07.06.2026 अनबागम वृद्धाश्रम में परोपकार सेवा के अंतर्गत 50 व्यक्तियों को श्रद्धापूर्वक बैठाकर भोजन लाभ सेवा दिया गया। मिंट स्ट्रीट स्थित जैन स्थानक में सामूहिक सामायिक, स्वाध्याय कक्षा के साथ आयोजन किया गया।

प्रेषक : लोकेश छल्लाणी जैन

तमिल दंपति ने मांसाहार का त्याग किया

चेन्नई (तमिलनाडु) : आचार्य सम्राट पूज्य श्री आनंदऋषि जी म. की सुशिष्या दक्षिण ज्योति महाश्रमणी श्री डॉ. आदर्श ज्योतिजी म. आदि ठाणा 3 अडियार में देवराजजी लुणावत जैन के निवास स्थान पर महासतियों के आशीर्वाद से उनके यहाँ काम करने वाले तमिल भाई और उनकी पत्नी ने मांसाहार का पूर्ण रूप से त्याग किया। इस उपलक्ष में पुरुषवाकम संघ के द्वारा उनका सम्मान किया गया।

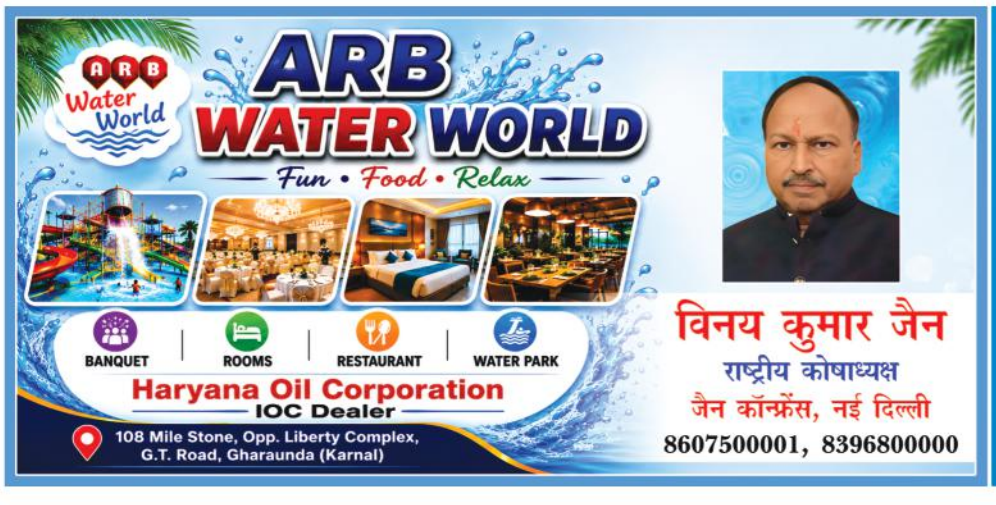

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

दिल्ली में जैन संस्कार शिविर का आयोजन

नई दिल्ली : एस.एस. जैन सभा, रोहिणी सेक्टर-3, दिल्ली के तत्वावधान में 1 जून से 10 जून तक आयोजित जैन संस्कार शिविर का भव्य समापन 10 जून को संपन्न हुआ। इस शिविर में 150 से अधिक बच्चों ने भाग लेकर जैन धर्म के संस्कारों एवं जीवन मूल्यों को सीखा। समापन समारोह में जैन कॉन्फ्रेंस की राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा श्रीमती संतोष सुरेश जैन ने बच्चों को उपहार भेंट कर उनका उत्साहवर्धन किया। इस अवसर पर श्रीमती अनिता जैन एवं श्रीमती स्वीटी जैन भी विशेष रूप से उपस्थित रही। जैन सभा की समस्त टीम एवं शिविर संचालकों का यह प्रयास अत्यंत सराहनीय रहा। प्रेषक : संतोष सुरेश जैन

जैन महासंघ पूर्वी दिल्ली के चुनाव सम्पन्न

दिल्ली : जैन महासंघ पूर्वी दिल्ली के चुनाव श्री जगरोशन लाल जैन, कैलाश नगर एवं श्री भूषण प्रकाश जैन संरक्षक पूर्वी दिल्ली जैन महासंघ द्वारा संपन्न कराये गए। जिसमें अध्यक्ष-श्री अशोक कुमार जैन 'खट्टे वाले' (विश्वास नगर), उपाध्यक्ष-श्री मिठन लाल जैन (यमुना विहार), उपाध्यक्ष-श्री अनिल जैन पड़ासोली (ऋषभ विहार), महामंत्री-श्री मनोज जैन (शास्त्री पार्क), कोषाध्यक्ष-श्री दिनेश जैन (भजन पुरा), मंत्री-श्री कमल जैन (नवीन शाहदरा), मंत्री-मुकेश जैन (कैलाश नगर) जल बोर्ड वाले, मंत्री-श्री अनिल जैन (कैंथवाड़ा), मंत्री-श्री राजीव जैन (शिव विहार), उपप्रधान पद के अलावा सभी पदाधिकारी निर्विरोध निर्वाचित हुए। प्रेषक : मनोज जैन

श्रमण संघीय जैन पर्व

दिनांक 17 जून : प्रवर्तक श्री अम्बालाल जी म. - जन्म जयंति
दिनांक 17 जून : उपाध्याय श्रमण श्री फूलचंद जी म. - स्मृति दिवस
दिनांक 24 जून : उपाध्याय श्री पुष्कर मुनि जी म. - दीक्षा जयंति
दिनांक 24 जून : उपाध्याय श्री हेमचंद जी म. - जन्म जयंति
दिनांक 25 जून : आचार्य श्री धर्मदास जी म. - स्मृति दिवस
दिनांक 27 जून : प्रधानमंत्री श्री मदनलाल जी म. - स्मृति दिवस

लौकिक एवं राष्ट्रीय पर्व

दिनांक 17 जून : महाराणा प्रताप जयंति
दिनांक 21 जून : अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस
दिनांक 21 जून : फादर्स डे
दिनांक 25 जून : निर्जला एकादशी
दिनांक 29 जून : संत कबीरदास जयंति

एस.एस. जैन महासभा हरियाणा के नए पदाधिकारियों का चुनाव सम्पन्न

करनाल (हरियाणा) : दिनांक 07 जून को एस.एस. जैन महासभा हरियाणा की साधारण सभा की बैठक जैन स्थानक हनुमान गली, करनाल में श्री जे.पी. जैन-प्रधान की अध्यक्षता में आयोजित की गई। सभा में हरियाणा के विभिन्न श्रीसंघों से आए प्रतिनिधियों ने भाग लिया। बैठक में उपस्थित सदस्यों द्वारा विचार-विमर्श के बाद प्रधान पद के लिए श्री रविन्द्र जैन-पानीपत को निर्वाचित घोषित किए गया। उपस्थित सदस्यों के श्री अश्विनी जैन को चेयरमैन व श्री जे.पी. जैन को संरक्षक के तौर पर मनोनीत किया। महासचिव के पद के लिए श्री सुभाष जैन-पानीपत को निर्वाचित घोषित किया गया तथा कोषाध्यक्ष के पद के लिए श्री राजेन्द्र जैन-पानीपत को निर्वाचित घोषित किया गया। आगामी तीन वर्ष के लिए एस.एस. जैन महासभा हरियाणा की नई कार्यकारिणी का चुनाव सम्पन्न हुआ।

प्रेषक : नवीन जैन

कर्नाटक प्रांतीय महिला शाखा द्वारा बॉवरिंग हॉस्पिटल में 'चाय-बन' वितरित

बैंगलोर (कर्नाटक) : श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, कर्नाटक प्रांतीय महिला शाखा द्वारा बॉवरिंग हॉस्पिटल में सेवा एवं मानवता के भाव को समर्पित चाय एवं बन वितरण कार्यक्रम का सफल आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नवकार मंत्र एवं मंगलपाठ के साथ किया गया, जिससे संपूर्ण वातावरण आध्यात्मिक एवं मंगलमय बन गया। इस अवसर पर लगभग 1500 चाय एवं बन अस्पताल के विभिन्न वार्डों में भर्ती मरीजों, उनके परिजनों तथा अस्पताल कर्मियों को वितरित किए गए।

कार्यक्रम की अध्यक्षता महिला शाखा अध्यक्षा श्रीमती संतोष आच्छा जैन ने की। चेयरपर्सन श्रीमती रसीला मरलेचा जैन, महामंत्री श्रीमती सपना संघवी जैन, वरिष्ठ उपाध्यक्षा श्रीमती इंद्रा गादिया जैन तथा राष्ट्रीय उपाध्यक्षा श्रीमती निर्मल सांखला जैन उपस्थित रही। कार्यक्रम को सफल बनाने में श्रीमती मंजू मांडोत जैन, श्रीमती ललिता मरलेचा जैन, श्रीमती पुष्पा बोहरा जैन, श्रीमती ममता कोठारी जैन एवं श्रीमती नगीना मंडोत जैन का योगदान रहा। साथ ही विभिन्न योजना अध्यक्षा एवं मंत्रियों में श्रीमती विमला रांका जैन, श्रीमती मंजू मरलेचा जैन एवं श्रीमती प्रभा खाबिया जैन सहित अनेक सदस्याओं की सक्रिय सहभागिता रही। कार्यक्रम के दौरान प्रोटोकॉल संबंधी जानकारी एवं संचालन का दायित्व श्रीमती मंजू मंडोत जैन एवं श्रीमती सपना संघवी जैन द्वारा निभाया गया।

प्रेषक : संतोष आच्छा जैन

बैंगलोर में धार्मिक आयोजनों में धार्मिकता और सादगी अपनाने का लिया संकल्प

बैंगलोर (कर्नाटक) : श्री श्वेतांबर स्थानकवासी जैन महासंघ बैंगलोर के सात सूत्रीय मार्गदर्शिका का पुनर्पुष्टीकरण कर विजयनगर स्थानक भवन में आयोजित कार्यकारिणी सभा में उपस्थित अनेक स्थानकवासी संघों के पदाधिकारियों ने धार्मिक आयोजनों में धार्मिकता और सादगी को प्राथमिकता देने का संकल्प लिया। नवकार मंत्र के सामूहिक उच्चारण के मंगलाचरण के पश्चात बैंगलोर में गत् दिनों दिवंगत साध्वी श्री दर्शनप्रभा जी एवं चंदनप्रभा जी के प्रति श्रद्धासुमन अर्पित किए गए। महासंघ के अध्यक्ष श्री भीकमचंद सकलेचा जैन ने कहा कि धार्मिक आयोजनों में आडंबर और फिजूल खर्ची से बचना चाहिए तथा युवा वर्ग को प्रोत्साहित करना चाहिए। महासंघ की सभा में बैंगलोर के 25 संघ एवं चातुर्मास समिति ने सहभागिता रखी। श्री रतनलाल सुराणा, जसवंत छाजेड़, मनोहरलाल लुंकड़, सुरेश धोका, अशोक लोढ़ा, अशोक धोका, पारसमणी रूणवाल, महेंद्र मुनोत, सुमेरसिंह मुनोत, दीपचंद भंसाली, नेमीचंद दलाल, रमेश सिसोदिया, कन्हैयालाल सुराणा, सुनील लोढ़ा, एवं पारसमल नाहर ने अपने विचार व्यक्त करते महासंघ के अभियान को अपना समर्थन व्यक्त किया। विजयनगर संघ ने सभा आयोजन व्यवस्था का लाभ लिया। हस्तीमल बाफना ने धन्यवाद प्रेषित किया। प्रेषक : अभय कुमार बांठिया

72 दिवसीय महान तपस्या पूर्ण करने पर श्रीमती सुमन जैन का भव्य सम्मान

पानीपत (हरियाणा) : 14 जून को जैन धर्म की महान तपस्या परंपरा को जीवंत करते हुए श्रीमती सुमन जैन (धर्मपत्नी तपस्वी रत्न श्री रविन्द्र जैन, पानीपत) द्वारा 72 दिनों की निराहार उपवास तपस्या पूर्ण करने के उपलक्ष्य में श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन स्थानक, अग्रवाल मंडी, पानीपत द्वारा भव्य सम्मान समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर उन्हें एस.एस. जैन महासभा हरियाणा (पंजीकृत) द्वारा भी "विशिष्ट तप साधना गौरव सम्मानो से सम्मानित किया गया। समारोह में एस.एस. जैन महासभा हरियाणा की नवगठित प्रदेश कार्यकारिणी ने श्रीमती सुमन जैन को सम्मान पत्र एवं शॉल भेंट कर अभिनंदन किया। इस अवसर पर महासभा के अध्यक्ष रविन्द्र जैन, चेयरमैन अश्विनी जैन कुरुक्षेत्र, महासचिव सुभाष जैन, कोषाध्यक्ष राजेन्द्र जैन, समाजसेवी राजेन्द्र जैन (बद्री मिल), अग्रवाल मंडी जैन सभा के अध्यक्ष गौतम जैन, संरक्षक जगदीश जैन, उपाध्यक्ष सुभाष जैन, कोषाध्यक्ष राजेन्द्र जैन, भक्त महावीर जैन, डा. ए.पी. जैन, सुभाष जैन सुधर्मा, अंसल जैन सभा के अध्यक्ष जगदीश जैन तथा सोनीपत से महावीर जैन एवं नरेश जैन सहित अनेक गणमान्य नागरिक, समाजसेवी, धर्मप्रेमी एवं जैन समाज के सदस्य उपस्थित रहे।

प्रेषक : सुभाष जैन

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र

जैन प्रकाश

PRGI : DLHIN/25/A4261
Postal Regn. No. DL(ND) 11/6078/2026-27-2028
U(C)-312/2026-28

Date of Publication : 15-06-2026
Date of Posting : 21/22-06-2026
E-mail : aissjc1906@gmail.com

भाषा : हिन्दी ✲ अंक : 15 ✲ पृष्ठ : 8
माह : जून ✲ सप्ताह : 15 जून से 21 जून

मूल्य : ₹ 10

सह-सम्पादक : जसवंत जैन-दिल्ली, पीयूष जैन-इंदौर, गौतम दुगड़ जैन-चेन्नई

स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के गौरवशाली महापुरुष श्रृंखला...

दानवीर, शिक्षाप्रेमी एवं संगठन-पुरुष : श्री मेघजी भाई थोभण (जे.पी.)

- प्रो. डॉ. अमितराय जैन

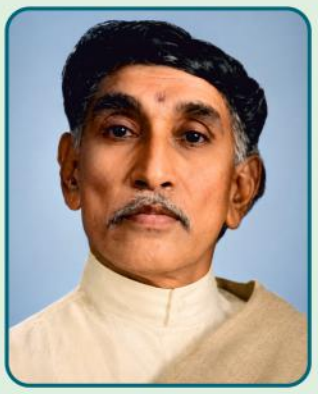

स्थानकवासी जैन समाज के इतिहास में कुछ ऐसे व्यक्तित्व हुए हैं जिन्होंने अपने जीवन को केवल व्यक्तिगत सफलता तक सीमित नहीं रखा, बल्कि समाज, शिक्षा, धर्म और संगठन की उन्नति के लिए स्वयं को समर्पित कर दिया। ऐसे ही यशस्वी महापुरुषों में श्री मेघजी भाई थोभणजी (जे.पी.) का नाम अत्यंत सम्मान और श्रद्धा के साथ स्मरण किया जाता है। वे केवल एक सफल व्यवसायी ही नहीं, बल्कि दूरदर्शी समाजसेवी, शिक्षा के प्रबल समर्थक, दानवीर तथा स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के प्रभावशाली राष्ट्रीय अध्यक्ष पद पर रहे थे।

भाद्रपद कृष्ण त्रयोदशी संवत् 1919 सन 1862 को कच्छ-भुज में बीसा ओसवाल परिवार में जन्मे श्री मेघजी भाई ने युवावस्था में ही व्यापारिक क्षेत्र में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की। मात्र पंद्रह वर्ष की आयु में वे मुंबई पहुँचे और आगे चलकर मेसर्स मिल कंपनी के साथ भागीदारी में कार्य करते हुए आर्थिक रूप से समृद्ध हुए। किंतु उनकी वास्तविक पहचान उनकी धन-संपदा नहीं, बल्कि धर्म और समाज के प्रति उनके समर्पण से निर्मित हुई।

धर्मनिष्ठा और समाजसेवा का अद्वितीय संगम : श्री मेघजी भाई बचपन से ही धर्मप्रेमी थे। साधु-साध्वियों के संपर्क में आने के बाद उनका झुकाव धार्मिक और सामाजिक कार्यों की ओर और अधिक बढ़ा। मुंबई में स्थानक की कमी उन्हें सदैव खटकती थी। इस आवश्यकता को समझते हुए उन्होंने स्वयं उदार आर्थिक सहयोग प्रदान किया और व्यापक जनसहयोग जुटाकर बंगला चौबाड़ी क्षेत्र में स्थानक की स्थापना के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया। यह कार्य उनके संगठनात्मक कौशल और समाज के प्रति समर्पण का उत्कृष्ट उदाहरण है।

उनकी दानशीलता केवल धार्मिक संस्थानों तक सीमित नहीं थी। कच्छ और मांडवी क्षेत्र में अकाल के समय उन्होंने गरीबों और जरूरतमंदों को सस्ते मूल्य पर अन्न उपलब्ध कराया, आर्थिक सहायता दी तथा वस्त्र वितरित किए। उन्होंने विभिन्न लोकहितकारी कार्यों के लिए लाखों रुपये का दान देकर मानव सेवा की उच्च परंपरा को जीवंत बनाया।

शिक्षा जगत में अमूल्य योगदान : श्री मेघजी भाई का यह दृढ़ विश्वास था कि किसी भी समाज की वास्तविक प्रगति शिक्षा के माध्यम से ही संभव है। इसी दृष्टि से उन्होंने कच्छपाड़ा में 'श्री मेघजी थोभण जैन संस्कृत पाठशाला' की स्थापना कराई। यह संस्थान केवल धार्मिक शिक्षा का केंद्र नहीं था, बल्कि जैन संस्कृति, आगम-अध्ययन और नैतिक मूल्यों के संरक्षण का महत्वपूर्ण माध्यम भी बना। यहाँ मुनिराजों एवं वैरागी विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान की जाती थी, जिससे जैन ज्ञान परंपरा को नई पीढ़ियों तक पहुँचाने का कार्य हुआ।

उनकी शैक्षिक दृष्टि केवल संस्थान निर्माण तक सीमित नहीं थी। वे शिक्षा को समाज-सुधार का आधार मानते थे। इसलिए उन्होंने ऐसे प्रयासों को प्रोत्साहित किया जिनसे धार्मिक चेतना के साथ-साथ सामाजिक जागरूकता और नैतिकता का विकास हो।

करुणा और जीवदया के प्रतीक : श्री मेघजी भाई का व्यक्तित्व जैन धर्म के मूल सिद्धांत 'अहिंसा' की जीवंत अभिव्यक्ति था। मैसूर राज्य में शारदा देवी के मंदिर में प्रतिवर्ष हजारों पशुओं की बलि दी जाती थी। इस अमानवीय परंपरा को समाप्त कराने में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा। यह कार्य केवल धार्मिक भावना का नहीं, बल्कि जीवमात्र के प्रति करुणा और संवेदनशीलता का अनुपम उदाहरण था। उनकी इसी लोकसेवी भावना के सम्मान में मैसूर राज्य में उनके नाम से एक अस्पताल की स्थापना की गई, जिसके निर्माण में उन्होंने और उनके निकट संबंधियों ने उदार आर्थिक सहयोग दिया। यह अस्पताल उनकी मानवीय दृष्टि और सेवा-भाव का स्थायी स्मारक बन गया।

स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस में नेतृत्व : स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के इतिहास में श्री मेघजी भाई का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। कॉन्फ्रेंस के छठे अधिवेशन, मलकापुर में उन्हें अध्यक्ष पद का दायित्व सौंपा गया। उनके नेतृत्व में संगठन को नई दिशा और नई ऊर्जा प्राप्त हुई। उन्होंने समाज में जागृति, संगठनात्मक एकता और धार्मिक चेतना को सुदृढ़ करने का कार्य किया। उनके कार्यकाल में कॉन्फ्रेंस केवल एक संगठन नहीं रही, बल्कि समाज सुधार, शिक्षा विस्तार और धार्मिक मूल्यों के संरक्षण का प्रभावशाली मंच बनी। उन्होंने संगठन के प्रशासन को दक्षता और पारदर्शिता के साथ संचालित किया तथा समाज के विभिन्न वर्गों को जोड़ने का सफल प्रयास किया। मुंबई के मुख्य संघ के अध्यक्ष के रूप में भी उन्होंने दीर्घकाल तक अत्यंत कुशलता से दायित्व निभाया। आपके नेतृत्व में ही पूज्य आचार्य श्री जवाहरलाल जी महाराज का मुंबई घाटकोपर में ऐतिहासिक चातुर्मास भी संपन्न हुआ।

प्रेरणादायी विरासत : श्री मेघजी भाई थोभणजी का जीवन यह संदेश देता है कि आर्थिक सफलता तभी सार्थक है जब वह समाज और मानवता के कल्याण में समर्पित हो। शिक्षा, धर्म, जीवदया, दान और संगठन निर्माण-इन सभी क्षेत्रों में उनका योगदान उन्हें स्थानकवासी जैन समाज के गौरवशाली महापुरुषों की अग्रिम पंक्ति में स्थापित करता है।

आज जब स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस अपने गौरवशाली इतिहास को स्मरण करती है, तब श्री मेघजी भाई थोभणजी का व्यक्तित्व एक ऐसे आदर्श के रूप में सामने आता है, जिसने अपने कर्मों से समाज को दिशा दी, शिक्षा को शक्ति दी और संगठन को स्थायित्व प्रदान किया। उनका जीवन आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का अक्षय स्रोत बना रहेगा।

जैन गौरव

अद्भुत विलक्षण प्रतिभा के धनी युवा वैज्ञानिक अंशुल जैन

इन्दौर की धरती को गौरान्वित करने वाले अंशुल जैन का जन्म देवी अहिल्या की पावन नगरी में हुआ। जैनेटिक साइन्स के छात्र हैं। श्री डी. जैन व श्रीमती कल्पना जैन के लाड़ले सपूत हैं। जीवन की आधारशिला का आधार है उच्च शिक्षित सम्पन्न परिवार। वर्तमान में डब्ल्यू.एच.ओ.के.डी.ओ.ई. में आप जूनियर वैज्ञानिक के तौर पर कार्यरत हैं। विश्व के सबसे जूनियर साइंटिस्ट अंशुल जैन ने अपनी योग्यता की छाप अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पूरे विश्व में उस समय स्थापित कर ली जब इन्होंने भारत में ही रहते हुए 1-2 नहीं पूरे 42 अनसुलझे अन्तर्राष्ट्रीय अपराधिक वारदातों को सुलझाकर दुनिया भर के अपराध विशेषज्ञों, सुपर कॉप्स और फोरेंसिक मेडिसिन साइंटिस्ट को चकित कर दिया है।

अंशुल जैनेटिक साइंटिस्ट हैं और उनका नाता मानव रक्त में मौजूद गुणसूत्रों व डी.एन.ए. से है, उन्होंने रक्त और जीन्स के नमूनों के आधार पर ही अपराधियों को बेनकाब किया है।

भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने अंशुल जैन को ओजोन मेन ऑफ द वर्ल्ड घोषित किया है। कलाम साहब ने उपलब्धियों को उत्कृष्ट बताते हुए एक व्यक्तिगत पत्र भी लिखा था।

दुनिया भर से अंशुल जैन की अविश्वनीय प्रतिभा से चमत्कृत लोगों के बधाई पत्र भारत की महामहिम राष्ट्रपति महोदय को मिले। राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल ने अंशुल की उपलब्धियों से अभिभूत होकर एक व्यक्तिगत बधाई पत्र भी प्रेषित किया है। श्री अंशुल जैन की विलक्षण बुद्धि से प्रभावित होकर अमेरिका की फोरेंसिक रिसर्च काउंसिल ने क्राइम इन्वेस्टिगेशन सेल में इन्हें मनोनित किया है।

अंशुल कहते हैं कि पूरी मानवता और प्राणीमात्र के कल्याण के लिये मैं जैनेटिक के क्षेत्र में आया। जिस परीक्षा को देकर मैं 100 प्रतिशत अंक प्राप्त कर सफल हुआ हूँ, उसके लिए प्रवेश की पात्रता उन्हीं को है जो शाकाहारी हैं। प्याज, लहसुन अथवा तामसिक आहार नहीं करते अन्यथा उसको छोडना पड़ता है। इसका कारण है कि इनसे क्रोध और तामसिक प्रवृत्ति पैदा होती हैं और इस क्षेत्र में धैर्य और शांत चित्त की आवश्यकता है। मैं जैन हूँ इसलिए मुझे प्रवेश में सरलता से पात्रता मिली, इसका मुझे गर्व है।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस हर वर्ष 21 जून को दुनिया भर में मनाया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य योग के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक लाभों के बारे में वैश्विक जागरूकता बढ़ाना है। यह प्राचीन भारतीय परंपरा भारत द्वारा विश्व को दिया गया एक अनमोल उपहार है। 21 जून उत्तरी गोलार्ध में वर्ष का सबसे लंबा दिन होता है। भारतीय संस्कृति में, इस दिन को 'ग्रीष्म संक्रांति' कहा जाता है, जिसके बाद सूर्य दक्षिणायन होता है। आध्यात्मिक दृष्टिकोण से, यह समय योग साधना के लिए बहुत सकारात्मक और ऊर्जावान माना जाता है।

समाजरत्न दानवीर भामाशाह
लाला आनन्द प्रकाश जी जैन
महिलारत्न
स्व. श्रीमती कमलेश आनन्द प्रकाश जी जैन

देश में विराजित पूज्य संत-साध्वीजी म. के पावन चरणों में
कोटि-कोटि वंदन एवं श्रद्धापूर्ण नमन

NAMO eWaste

Namo e waste Management Ltd.
E waste & lithium in battery recycling
EPR facility
8130393628 admin@namoewaste.com

Vardhman Recycling LLP
Old vehicles recycling with certificate of disposal
Plastic recycling EPR facility
8130393611 vardhmanautorecycling@gmail.com

नरेश आनन्दप्रकाश जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष
ज्ञान प्रकाश योजना, जैन कॉन्फ्रेंस

रचना नरेश जैन
राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक
जैन कॉन्फ्रेंस, राष्ट्रीय महिला शाखा

सम्पादकीय अस्वीकरण : 'जैन प्रकाश' में प्रकाशित समाचार, लेख एवं विचार संबंधित लेखकों/समाचार प्रेषकों/अन्य स्रोतों के निजी विचार हैं। उनकी सत्यता एवं प्रामाणिकता के लिए वही उत्तरदायी होंगे। संपादक एवं प्रकाशक किसी भी त्रुटि, मानहानि या विवाद के लिए उत्तरदायी नहीं होंगे। यह प्रकाशन भारतीय प्रेस एवं पंजीकरण अधिनियम, 1867 तथा लागू भारतीय कानूनों के अंतर्गत है। किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र नई दिल्ली होगा। - डॉ. अमित जैन (सम्पादक/प्रकाशक)

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस (रजि.) के लिए सम्पादक एवं प्रकाशक अमित जैन द्वारा मुद्रक पारस ऑफसेट प्रा.लि., 118-F, सेक्टर 56, फेज 5, कुंडली इंडस्ट्रियल स्टेट, सोनीपत - 131 028 द्वारा मुद्रित।
केन्द्रीय कार्यालय : जैन भवन, 12, शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली - 110 001 से प्रकाशित ✲ सम्पर्क : 90197 31906